Tanquiri.AI

# व्याकरण

# Teacher's Manual

## Grade 1 to 5

MASTER MIND

# व्याकरण भाग - 1

## 1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं।

2. भाषा के दो रूप होते हैं।

3. (i) मौखिक भाषा (ii) लिखित भाषा

4. स्वर संख्या में 11 होते हैं।

5. व्यंजन 33 होते हैं।

6. **अनुस्वार** - हंस, बंदर, शंख

**अनुनासिक** - आँख, चाँद, गाँव

(ख) 1. भाषा 2. वर्णों 3. 11 4. अयोगवाह 5. संयुक्त व्यंजन

## 2. स्वरों की मात्राएँ

(क) 1. उ, ऊ, ऋ की मात्रा व्यंजन के नीचे लगती हैं।

2. शब्द निर्माण हेतु व्यंजन के बाद आने वाले स्वर को मात्रा कहते हैं।

3. ए, ऐ की मात्रा व्यंजन के ऊपर लगती हैं।

4. व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं।

5. आ, ई, ओ, औ की मात्रा व्यंजन के आगे लगती हैं।

(ख) आ-ा, ई-ी, ऊ-ू, ओ-ो, औ-ौ, ऋ-ृ

(ग) कौआ, कोयल, कुम्हार, रुपया, तितली, मटका, वृक्ष, पंखा, कूलर

(घ) कोयल = क् + ओ + य् + अ + ल् + अ

कूप = क् + ऊ + प् + अ

राहुल = र् + आ + ह् + उ + ल् + अ

विलाप = व् + इ + ल् + आ + प् + अ

तेजस = त् + ए + ज् + अ + स् + अ

ताजमहल = त् + आ + ज् + अ + म् + अ + ह् + अ + ल् + अ

उत्तीर्ण = उ + त् + त + ई + ण + र

विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

(ङ)

| स्वर-आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा - ा | ि | ी | ु | ू | ृ | े | ै | ो | ौ |
| शब्द-आम | बिल | कील | पुल | फूल | भृग | केला | बैल | तोता | पौधा |

## 3. शब्द और वाक्य

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

2. जिस शब्द समूह से पूरी बात समझ में आ जाए, वाक्य कहलाते हैं।

3. वाक्य शब्दों के मेल से बनते हैं।

(ख) हल, गाय, हाथी, पंख, जग, बिजली

(ग) घर, तारे, जमीन, सड़क, आसमान, नमकीन

(घ) 1. आज मैं दिल्ली जा रहा हूँ।
3. मेरा नाम मोहित कुमार है।
2. मनोज तालाब में तैर रहा है।
4. तुम राधा के घर जा रहे हो।
5. माँ जा रही है।

## 4. संज्ञा

(क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) 1. व्यक्तियों के नाम – मीराबाई, सचिन तेंदुलकर, महात्मा गांधी

2. स्थानों के नाम – गाँव, बाजार, शहर

3. भावों के नाम – बचपन, प्रसन्नता, दु:ख

4. कार, बस, साइकिल

5. कबूतर, तोता, चिड़िया

6. गाय, बकरी, घोड़ा

7. मेज, कप, पुस्तक

8. आलू, टमाटर, गाजर

## 5. लिंग

(क) 1. लिंग शब्द का वह रूप है जिससे उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता चलता है।

2. लिंग दो प्रकार के होते हैं।

3. (i) पुल्लिंग (ii) स्त्रीलिंग

4. जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं।

5. लड़का, मोर, शिक्षक, दादाजी, सैनिक

6. जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं।

7. स्त्रीलिंग – दादी, अध्यापिका, राजकुमारी, मौसी, छात्रा

(ख) पिता–माता, औरत–मर्द, शिष्य–शिष्या, प्रधानाचार्य–प्रधानाचार्या, घोड़ा–घोड़ी, अध्यापक–अध्यापिका, गाय–बैल, लड़का–लड़की, महोदय–महोदया, मुर्गा–मुर्गी, नेता–नेत्री, मोरनी–मोर

## 6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से हमें संख्या का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

2. वचन के दो भेद होते हैं– एकवचन तथा बहुवचन।

3. घर, पेड़, पानी, बेर, चावल।

(ख) रानी–रानियाँ, रोटी–रोटियाँ, बल्ला–बल्ले, बतख–बतखें, गाड़ी–गाड़ियाँ, टोपी–टोपियाँ

## 7. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं।

2. अपने लिए मैं और हम का प्रयोग करते हैं। जो बात सुनता है, उसके लिए तू, तुम, आप का प्रयोग किया जाता है।

(ख) 1. तुम 2. वे 3. मैं 4. आप

(ग) 1. वे बाजार जा रहा हैं।

2. वह कहाँ जा रहे हैं?

3. वे विद्यालय से आ रहे हैं।

4. वे दोनों मित्र हैं।

5. वह डॉक्टर के पास जा रही है।

(घ) 1. हम 2. वे 3. तुम 4. मैं

## 8. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

2. हाँ, विशेषण शब्द संज्ञा के बाद भी आते हैं।

3. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

(ख) भूरा, तीन, एक, हरी, ठंडी, गरम

(ग) भूरी, नौ, चालाक, हरा, काली, मोटा, मीठा, गर्म

## 9. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं।

2. क्रिया के बिना कोई वाक्य पूरा नहीं होता है।

(ख) खेलना, झूलना, हँसना, कूदना

(ग) 1. नहाता 2. रो रही 3. पूछ रहा 4. गया

(घ) 1. गरजता है 2. हिनहिनाता है 3. चहचहाती है 4. दहाड़ता है 5. चिंघाड़ता है

## 10. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

2. पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्द भी कहते हैं।

(ख) घर–गृह, हाथी–गज, बादल–नीरद, आग–अनल

(ग) सूर्य – सूरज, रवि

धरती – पृथ्वी, वसुधा

पिता – बाप, जनक

पुत्र – सुत, बेटा

(घ) पिता बाप

सूर्य भानु

ताल तालाब

झंडा पताका

नेत्र नयन

### 11. विलोम शब्द

(क) 1. जो शब्द एक-दूसरे का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

2. विलोम शब्दों को विपरीतार्थक या विपरीतार्थी शब्द भी कहते हैं।

(ख) रोगी-निरोगी, खरा-खोटा, यश-अपयश, पास-दूर, थोड़ा-ज्यादा, दिन-रात

(ग) धूप-छाया, खट्टा-मीठा, कम-अधिक, खरा-खोटा

### 12. मुहावरे

(क) 1. मुहावरे के प्रयोग से भाषा सुंदर हो जाती है।

2. वे शब्द-समूह जिनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में होता है, मुहावरे कहलाते हैं।

(ख) 1. पत्थर, 2. मुर्दे, 3. जूँ

(ग) 1. स्वर्ग सिधारना मृत्यु होना

2. हाथ मलना पछताना

3. अंधे की लाठी एकमात्र सहारा

4. गाँठ बाँधना याद रखना

5. टाँग अड़ाना दखल देना

(घ) 1. समय पड़ने पर काम न आना, 2. भाग जाना, 3. कतराना

### 13. पत्र-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

### 14. कहानी लेखन

1. **शेर और खरगोश**

किसी जंगल में एक शेर रहता था। वह हमेशा जंगल में रहने वाले जानवरों को मारकर खा जाता था। इस कारण जंगल के सभी जीव-जंतुओं को शेर से बहुत डर लगता था।

एक बार सभी जानवरों ने मिलकर शेर के साथ समझौता कर लिया कि प्रतिदिन एक पशु शेर के भोजन के लिए स्वयं उसके पास चला आएगा। शेर यह बात मान गया। उस दिन से रोज एक जानवर अपनी बारी से शेर के पास पहुंच जाता और दूसरे जानवर बिना डर के जंगल में घूमते।

एक बार खरगोश की बारी आई। वह धीरे-धीरे शेर के पास जा ही रहा था कि अचानक रास्ते में उसे एक तरकीब सूझी। वह बहुत देर करके शेर के पास पहुँचा। शेर भूखा होने के कारण बेचैन अपनी गुफा के बाहर चक्कर लगा रहा था। खरगोश को देखते ही शेर गरजा और बोला, ''अरे खरगोश! तुम इतनी देर से क्यों आए हो? भूख से मेरी जान निकली जा रही है।''

खरगोश बोला, ''महाराज! क्या बताऊं, हम पांच भाई आपकी सेवा के लिए आ ही रहे थे, परंतु रास्ते में एक दूसरा शेर मिल गया। वह बोला कि वह जंगल का राजा है। उसने हम पर हमला कर दिया और मेरे खरगोश भाइयों को खा गया। महाराज, मैं किसी तरह अपनी जान बचाकर आपको यह संदेश देने पहुँचा हूँ।'' यह बात सुनकर शेर बहुत क्रोधित हुआ और बोला, ''कहाँ है वह दुष्ट, जो अपने आप को राजा बता रहा है। मुझे दिखाओ, मैं अभी उसका काम तमाम करता हूँ।''

खरगोश, शेर को कुएं के पास ले गया। जब शेर ने कुएं में झांका तो उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी। उसे दूसरा शेर समझकर वह जोर से गरजा और क्रोधित होकर उस कुएं के अंदर छलांग लगा दी। परंतु उस कुएं के अंदर कोई दूसरा शेर था ही नहीं। वहां तो केवल जल ही जल था।

बाहर निकलने का कोई रास्ता भी नहीं था। शेर बहुत देर तक पानी के अंदर ही छटपटाता रहा और डूब कर वहीं मर गया। इस प्रकार नन्हे खरगोश ने अपनी चतुराई से अपनी तथा अन्य साथियों की जान बचाई।

**शिक्षा**- बुद्धि और विवेक के बल पर कोई भी कार्य संभव है।

2. **प्यासा कौआ**

एक बार की बात है, गर्मियों की चिलचिलाती दोपहर में एक प्यासा कौआ पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था, लेकिन उसे पानी कहीं नहीं मिला। वह पानी की खोज में उड़ता ही जा रहा था। उड़ते-उड़ते उसकी प्यास बढ़ती जा रही थी, जिस कारण उसकी हालत खराब होने लगी। अब कौए को लगने लगा कि उसकी मौत नजदीक है, लेकिन तभी उसकी नजर एक घड़े पर पड़ी।

वो तुरंत हिम्मत जुटाकर उस घड़े तक पहुंचा, लेकिन उसकी खुशी बस कुछ समय के लिए ही थी, क्योंकि उस घड़े में पानी तो था, लेकिन इतना नहीं था कि कौए की चोंच उस पानी तक पहुंच सके। कौए ने हर तरह से पानी पीने की कोशिश की, लेकिन वह पानी पीने में सफल नहीं हो पाया।

अब कौआ पहले से भी ज्यादा दुखी हो गया था, क्योंकि उसके पास पानी होते हुए भी वह प्यासा था। कुछ देर घड़े को देखते-देखते कौए की नजर घड़े के आस-पास पड़े कंकड़ों पर पड़ी और कंकड़ों को देखते ही उसके मन में एक योजना आई।

उसने सोचा कि थोड़ी मेहनत करके अगर वह एक-एक करके सारे कंकड़ घड़े में डाल दे, तो पानी ऊपर आ जाएगा और वो आसानी से पानी पी सकेगा। उसने एक-एक कर आसपास पड़े कंकड़ों को घड़े के अंदर डालना शुरू किया। जिससे पानी धीरे-धीरे ऊपर आने लगा। अन्ततः कौए ने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई।

**शिक्षा**- संकट के समय में हिम्मत तथा संयम से किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

### 15. निबंध लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

# व्याकरण भाग - 2

## 1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा सार्थक शब्दों तथा वाक्यों का ऐसा समूह है जिसके द्‌वारा हम अपने विचार प्रकट करते हैं।

2. भाषा के दो रूप होते हैं-

(i) मौखिक भाषा (ii) लिखित भाषा

3. जिन वर्णों और शब्दों में भाषा लिखी जाती है, वह उस भाषा की लिपि कहलाती है अर्थात भाषा के लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं।

4. प्रत्येक भाषा में कुछ नियम होते हैं। इन नियमों को जानने पर ही हम भाषा को शुद्‌ध रूप से बोलना और लिखना सीखते हैं। भाषा की यह नियम व्यवस्था ही व्याकरण कहलाती है।

5. जो भाषा मुख से बोली और कानों से सुनी जाती हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं।

6. जो भाषा लिखी और पढ़ी जाती है, उसे लिखित भाषा कहते हैं।

(ख) 1. लिपि 2. तेलुगु 3. हिंदी 4. रोमन 5. वाक्य

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अंग्रेजी | रोमन | 2. | अंग्रेजी | रोमन |
| 3. | हिंदी | देवनागरी | 4. | मराठी | देवनागरी |
| 5. | संस्कृत | देवनागरी | 6. | नेपाली | देवनागरी |

(ङ) 1. मैं बाजार जाता हूँ।

2. विद्‌यार्थी विद्‌यालय में पढ़ता है।

3. उसने सुंदर कपड़े सिलवाये हैं।

4. नहर में पानी ज्यादा है।

5. स्वास्थ्य का ध्यान रखो।

(च) 1. मौखिक 2. लिखित 3. लिखित 4. मौखिक

## 2. वर्ण और वर्णमाला

(क) 1. वह ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है।

2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर और व्यंजन।

3. जो वर्ण किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बिना बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

4. व्यंजन और स्वर का मेल होने पर स्वर का रूप बदल जाता है। यह बदला हुआ रूप ही मात्रा कहलाता है।

5. किसी भाषा के सभी वर्णों के क्रमबद्‌ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

(ख) 1. आरंभ 2. अं, अः 3. संयुक्त व्यंजन, 4. अनुस्वार

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. ताला 2. वक 3. मोर 4. हिरन 5. बीन 6. रात 7. टमाटर

(ङ) 2. त् + ओ + त् + आ 3. क् + आ + य् + आ

4. म् + अ + य् + ऊ + र् + अ

(च)

| | |
|---|---|
| 1. पंख | 1. चाँद |
| 2. लंका | 2. माँ |
| 3. शंख | 3. गाँव |
| 4. हंस | 4. आँख |
| 5. बंदर | 5. चिड़ियाँ |

### 3. शब्द और वाक्य

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

2. शब्दों का वह सार्थक समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाए, वाक्य कहलाता है।

3. **सार्थक शब्द**– जिन शब्दों का कोई अर्थ निकलता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे– जल, सूरज आदि।

4. **निरर्थक शब्द**– जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे– वल, पूरज आदि।

5. **विकारी शब्द**– वाक्य में प्रयोग होने पर जिन शब्दों का रूप बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं; जैसे– बच्चा, घोड़ा, लड़का, बंदर, कमरा आदि।

**अविकारी शब्द**– वाक्य में प्रयोग होने पर जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे– तेज, जल्दी, कल, जब, लेकिन आदि।

(ख) 1. आम मीठा है।

2. रोज व्यायाम करना लाभदायक है।

3. खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

4. पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी मित्र हैं।

5. दिल्ली भारत की राजधानी है।

(ग)

| सार्थक शब्द | निरर्थक शब्द |
|---|---|
| आम, कुत्ता, राखी, फल, शेर, कलम, सड़क, घर, जंगल, पतला, पर्वत | दूध, वानी, लाओ, धिअक, पोड़ा, ढलक, बोदल, कपड़ |

(घ) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ङ) विकारी शब्द— घोड़ा, सारा, स्त्रियों, अच्छा

अविकारी शब्द— यहाँ, बहुत, बाजार

(च)

| | उद्देश्य | विधेय |
|---|---|---|
| 1. | लड़का | तैर रहा है। |
| 2. | राधा | पुस्तक पढ़ती है। |
| 3. | खरगोश | गाजर खा रहा है। |
| 4. | तोता | पानी पी रहा है। |
| 5. | बच्चे | खेल रहे हैं। |
| 6. | रोहित | कहानी पढ़ रहा है। |
| 7. | पारूल | कपड़े धोती है। |
| 8. | नीता | दिल्ली में रहती है। |

## 4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, व्यक्ति, स्थान, वस्तु, जाति, भाव, गुण आदि का नाम बताने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

2. संज्ञा के मुख्यत: तीन प्रकार हैं— जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, तथा भाववाचक संज्ञा।

3. जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के गुण, दोष, भाव, अवस्था, दशा या स्थिति आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

4. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

5. नहीं भावों को छुआ नहीं जा सकता है।

(ख) 1. अमरूद, हाथी, शेर, लड़का, बच्चा

2. भारत, मेरठ, सूरज, ताजमहल, मंगल, हिमालय

3. मित्रता, सुगंध, बुढ़ापा, प्रसन्नता, घोड़ा, मिठास, सुंदरता

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ)

| | |
|---|---|
| हाथी – जातिवाचक संज्ञा | चंद्रमा – व्यक्तिवाचक संज्ञा |
| बुढ़ापा – भाववाचक संज्ञा | मेरठ – व्यक्तिवाचक संज्ञा |
| बचपन – भाववाचक संज्ञा | आम – जातिवाचक संज्ञा |

## 5. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है उसे लिंग कहते हैं।

2. लिंग दो प्रकार के होते हैं।

3. लिंग के भेद— स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग

4. जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।

5. जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।

(ख) कुर्ता, गिलास, पर्दा, कंघा, लोटा

(ग) मेज, थाली, कलम, कुर्सी, पुस्तक

(घ) 1. नर–मादा 2. मामा–मामी 3. पंडित–पंडिताइन
4. छात्र–छात्रा 5. गायक–गायिका 6. राजा–रानी
7. मोर–मोरनी 8. भाई–बहन 9. महोदय–महोदया
10. प्रधानाचार्य–प्रधानाचार्या 11. नौकर–नौकरानी 12. बूढ़ा–बूढ़ी

(ङ) 1. (iii), 2. (i), 3. (v), 4. (ii), 5. (iv)

(च) 1. स्त्री–पुरुष 2. नायिका–नायक 3. धोबिन–धोबी
4. श्रीमती–श्रीमान 5. बालिका–बालक 6. युवती–युवक
7. जेठानी–जेठ 8. बहन–भाई 9. मुर्गी–मुर्गा
10. शेरनी–शेर 11. हथिनी–हाथी 12. गायिका–गायक

(छ) 1. स्त्री–पुल्लिंग 2. कुर्सी–स्त्रीलिंग 3. चुहा–पुल्लिंग
4. प्रधानाचार्य–पुल्लिंग 5. दूध–पुल्लिंग 6. अध्यापक–पुल्लिंग
7. नौकरी–पुल्लिंग 8. स्त्री–स्त्रीलिंग 9. गाय–स्त्रीलिंग
10. बंदरिया–स्त्रीलिंग 11. गायक–पुल्लिंग 12. औरत–स्त्रीलिंग
13. बूढ़ी–स्त्रीलिंग 14. ऊँट–पुल्लिंग

## 6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के एक अथवा एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

2. जिस शब्द से एक प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

3. जिस शब्द से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं को बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

(ख) नदी – नदियाँ, केला – केले, माला – मालाएँ, मिठाई – मिठाईयाँ,
बहन – बहनें, रुपया – रुपये, चुहिया – चहिये, मक्खी – मक्खियाँ,
दवाई – दवाईयाँ

(ग) लड़का – लड़के, मुर्गी – मुर्गियाँ, बकरी – बकरियाँ, घंटा – घंटे
परी – परियाँ, पत्ती – पत्तियाँ, डिब्बा – डिब्बे, कली – कलियाँ
दुकान – दुकानें

(घ) माताएँ – माता बहुएँ – बहु तिथियाँ – तिथि
मात्राएँ – मात्रा लताएँ – लता कक्षाएँ – कक्षा
मेजें – मेज बच्चे – बच्चा रानियाँ – रानी

(ङ) 1. मुझे मिठाईयाँ दो। 2. डिब्बे मेज पर रख दो।
3. चावल बनाकर खिलाओ।

## 7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

2. सर्वनाम के छः भेद हैं–

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम

(v) संबंधवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम

3. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति के बारे में पता नहीं चलता, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

4. जहाँ बोलने वाला अपने लिए अपना, आप, अपने आप या स्वयं आदि शब्द का प्रयोग करता है, वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है।

5. बोलने वाला सुनने वाले के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, वे मध्यम पुरुष कहलाते हैं; जैसे– तू, तुम, आप, तेरा, तुझे, तुम्हें, तुम्हारा, आपका आदि।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम के दो उदाहरण हैं– कौन, किसे आदि।

(ख) 1. मेरा 2. कोई 3. वह 4. किसका 5. हम

(ग) तुम बाज़ार जा रहे हो।, मैं खाना खा रहा था।,

अपना काम स्वयं करो।, तुमने किसे बुलाया है?,

हमारा गाँव दूर है।

(घ) 1. कोई दरवाजे पर है। 2. दूध में कुछ पड़ा है।

3. किसी ने सहायता नहीं की।

## 8. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरण– हरा, लाल, मीठा आदि।

2. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। उदाहरण– आदमी, बैंक, किताब आदि।

3. विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं, जिनके उदाहरण सहित निम्नलिखित नाम हैं–

| नाम | उदाहरण |
|---|---|
| गुणवाचक विशेषण | काला, लाल, गर्म |
| परिणामवाचक विशेषण | दो मीटर, एक लीटर, बहुत |
| संख्यावाचक विशेषण | एक, तीन, आठ |
| संकेतवाचक विशेषण | यह, वह, वे |
| व्यक्तिवाचक विशेषण | बंगाली, रामपुरी, धनी |

(ख) बूढ़ा आदमी, गर्म चाय, दो राजा, खट्टा संतरा, हरी घास, एक लीटर दूध

(ग) पाँच लीटर – दूध, नीली – साड़ी, बंगाली – रसगुल्ला, मीठा – आम, थोड़ा – पानी

(घ) 1. इतिहास – ऐतिहासिक 2. परिवार – पारिवारिक 3. वीर – वीरता
4. मूल – मौलिक 5. श्रद्धा – श्रद्धालू 6. गुण – गुणी
7. रोग – रोगी 8. दया – दयालु 9. संस्कृति – सांस्कृतिक

## 9. क्रिया

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य करने या होने का पता चलता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं।

2. क्रिया के बिना कभी वाक्य नहीं बन सकता है।

3. **सकर्मक क्रिया के उदाहरण–**

1. गाय घास खाती थी। 2. धोबी कपड़े धोता है।
3. पिताजी पत्र लिखते हैं। 4. बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
5. नेहा खाना खा रही है।

**अकर्मक क्रिया के उदाहरण–**

1. बच्चे सोते हैं। 2. रोनक खाता है।
3. घोड़ा चलता है। 4. हिरन दौड़ रहा है।
5. कोयल उड़ रही है।

(ख) 1. हो रहा है 2. तोड़ा था 3. धोयेगा 4. उड़ रही है 5. जाता है

(ग) 1. रोहित दौड़ रहा है। 2. दादा जी कहानी लिख रहे हैं।
3. छात्र विद्यालय जाते हैं। 4. कुत्ता सड़क पर बैठा है।
5. गाय घास खा रही है।

(घ) 1. लिखना 2. गाना 3. धोना

## 10. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का पता चलता है, वह काल कहलाता है।

2. **वर्तमान काल–** (i) सागर पढ़ रहा है। (ii) अनिता घर जा रही है।
**भूतकाल–** (i) नितिन खेल रहा था। (ii) पिताजी दिल्ली गए थे।
**भविष्यत् काल–** (i) मैं कल बाजार जाऊँगा। (ii) हम कल पिकनिक पर जाएँगे।

(ख) 1. अमित केला खाएगा। 2. निखिल विद्यालय जाता था।
3. विपिन अब रो रहा है। 4. दिशांत पतंग उड़ाएगा।
5. रीमा ने कहानी लिखी।

(ग) 1. खिलाड़ी फुटबाल खेल रहे हैं। 2. लड़की गाना गा रही है।

3. हम मन लगाकर पढ़ रहे हैं।

4. समय से सोना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। 5. मैं निबन्ध लिख रही हूँ।

(घ) 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल

3. भविष्यत काल 4. भूतकाल

## 11. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. जो शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं, वे पर्यावाची शब्द कहलाते हैं।

2. पर्यायवाची शब्दों को समानार्थक शब्द भी कहते हैं।

(ख) नदी – सरिता, तटिनी, तरंगिणी

भू – भूमि, धरती, पृथ्वी

माता – जननी, माँ, अम्मा

पुत्र – सुत, बेटा, तनय

दिन – दिवा, वासर, दिवस

## 12. विलोम शब्द

(क) 1. जो शब्द एक-दूसरे का ठीक उल्टा अर्थ बताते हैं वो विलोम शब्द कहलाते हैं।

2. विलोम शब्द को विपरीतार्थक नाम से भी जाना जाता है।

(ख) गुलामी – आजादी जटिल – सरल रंक – राजा प्रकाश – अंधकार

(ग) 1. अनुज – अग्रज 2. पाप – पुण्य 3. लाभ – हानि 4. शुभ – अशुभ

5. राजा – रंक

## 13. शब्द समूह के लिए एक शब्द

(क) शब्द-समूह के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(ख) 1. दुराचारी 2. अजर 3. परीक्षार्थी 4. निर्भय 5. स्पष्टवादी 6. जलचर

(ग) जो पढ़-लिखा न हो – **निरक्षर** जो दान देता है – **दानी**

प्रतिवर्ष होने वाला – **वार्षिक** जिसका आकार हो – **साकार**

छोटा भाई – **अनुज**

(घ) 1. आस्तिक 2. अपठनीय 3. निराकार 4. कृतघ्न

5. निर्भय 6. दैनिक 7. भाग्यवान 8. लालची

9. विदेशी 10. दानी

## 14. मुहावरे

(क) 1. मुहावरों के प्रयोग से भाषा रोचक और प्रभावशाली बन जाती है।

2. मुहावरों से भाषा रोचक व प्रभावशाली बन जाती है।

(ख) 1. छक्के छुड़ाना – रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ा दिए थे।

2. हथियार डालना– भारतीय सेना के सामने शत्रु सेना ने हथियार डाल दिए।

### 16. पत्र लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

### 17. कहानी लेखन

(क) एक लड़का जंगल में भेड़ चराने जाता था। वह बहुत शरारती था। उसे झूठ बोलकर लोगों को परेशान करने में बड़ा आनंद मिलता था। वह रोज 'भेड़िया आया – भेड़िया आया' चिल्लाता और लोग दौड़कर उसकी मद्द के लिए आते तो वह जोर–जोर से हँसने लगता। एक दिन वास्तव में भेड़िया आ गया। वह जोर–जोर से मद्द के लिए चिल्लाया लेकिन रोज के झूठ बोलने के कारण कोई भी उसकी सहायता के लिए नहीं आया। भेड़िया उस पर झपटा और उसे खा गया।

**शिक्षा–** झूठ का परिणाम दुखदायी होता है।

(ख) एक बार खरगोश को अपनी तेज चाल पर घमंड हो गया और वह जो मिलता उसे रेस लगाने के लिए चुनौती देता। कछुए ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली।

रेस हुई। खरगोश तेजी से भागा और काफी आगे जाने पर पीछे मुड़ कर देखा, कछुआ कहीं आता नज़र नहीं आया। उसने मन ही मन सोचा कछुए को तो यहाँ तक आने में बहुत समय लगेगा। चलो थोड़ी देर आराम कर लेते हैं, और वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। लेटे–लेटे कब उसकी आँख लग गई पता ही नहीं चला।

उधर कछुआ धीरे–धीरे मगर लगातार चलता रहा। बहुत देर बाद जब खरगोश की आँख खुली तो कछुआ लक्ष्य तक पहुँचने वाला था। खरगोश तेजी से भागा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कछुआ रेस जीत गया।

**शिक्षा–** निरंतर प्रयास करते रहने से ही सफलता मिलती है।

### 18. निबंध लेखन

विद्यार्थी अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

# व्याकरण भाग - 3

## 1. भाषा, लिपि और व्याकरण

(क) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्‌वारा हम अपने विचार प्रकट करते हैं।

2. भाषा के दो रूप हैं- मौखिक भाषा और लिखित भाषा।

3. अपने परिवार में रहकर व्यक्ति जिस भाषा को बोलता - सीखता है, उस भाषा को उसकी मातृभाषा कहते हैं।

4. वह भाषा जिसका प्रयोग देश में रहने वाले अधिकांश लोग परस्पर बातचीत करने में करते हैं, राष्ट्रभाषा कहलाती हैं।

5. भाषा को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए जिन संकेतों व ध्वनियों को प्रयोग किया जाता है, उनके समूह को लिपि कहते हैं।

6. व्याकरण वह विद्‌या है जिसके अध्ययन से हम भाषा को शुद्‌ध बोलना, पढ़ना और लिखना सीखते हैं।

(ख) 1. हिंदी 2. देवनागरी 3. देवनागरी 4. लिपि 5. व्याकरण भाषा के सही रूप का ज्ञान कराता है।

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(घ) केरल - मलयालम, महाराष्ट्र - मराठी, कर्नाटक - कन्नड़,
उड़ीसा उड़िया, असम - असमिया

(ङ) 1. गुजराती 2. कश्मीरी 3. पंजाबी 4. कोंकणी
5. हिंदी 6. खासी व गारो

(च) 1. देवनागरी 2. रोमन 3. गुरुमुखी 4. देवनागरी
5. देवनागरी 6. फारसी

(छ) 1. क्या मैंने कुछ खाया है। 2. सारिका कौनसे बाजार जा रही है।
3. आप मुझे जानते नहीं हैं। 4. हम कल नहीं जाएँगे।

## 2. वर्ण विचार

(क) 1. किसी भाषा के समस्त वर्णों का क्रमबद्‌ध समूह उस भाषा की वर्णमाला कहलाती है।

2. स्वर दो प्रकार के होते हैं- ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर।

3. **ह्रस्व स्वर**- जिस स्वर के बोलने में कम समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं।
**दीर्घ स्वर**- जिस स्वर के बोलने में अधिक समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।

4. वर्ण वह छोटी से छोटी ध्वनि है, जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

5. जो वर्ण न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन, उन्हें अयोगवाह कहते हैं।

(ख) 1. ध्वनियाँ 2. अ, इ, उ, ऋ 3. व्यंजन 4. नाम, मुँह 5. स्वर अ

(ग) 1. लड़का – ल् + अ + ड् + अ + क् + आ

2. बच्चा – ब् + अ + च् + च् + आ

3. मगर – म् + अ + ग् + अ + र् + अ

4. श्रमिक – श्र् + अ + म् + इ + क् + अ

5. ग्रह – ग् + र् + अ + ह् + अ

(घ) डॉक्टर, कॉफी, बॉल, कॉपी, मॉल आदि।

(ङ) हंस, पंक्ति, संचय, संयोग, जंगल, पंखा आदि।

(च) माँ, गाँव, आँख, कुँआ, चाँद, आदि।

### 3. शब्द विचार

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

2. वे शब्द जो संस्कृत भाषा के हैं और हिंदी भाषा में ज्यों के त्यों प्रयोग किये जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

3. वे शब्द जो संस्कृत भाषा के हैं और हिंदी भाषा में कुछ बदले हुए रूप में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

4. देशी शब्द— पत्थर, आटा, लोटा, घोंसला, पगड़ी।
विदेशी शब्द— फेन, कार, स्कूल, रेडियो, इंजन।

5. **विकारी शब्द**– वाक्य में प्रयोग होने पर जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदल जाते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं।
**अविकारी शब्द**– वाक्य में प्रयोग होने पर जिन शब्दों के रूप नहीं बदलते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ 6. ✗

(ग) तत्सम शब्द – कर्ण, चंद्र, दधि, कूल, रात्रि
तद्भव शब्द – काम, सूरज, दूध, दाँत, साँप

(घ) 1. देशी (देशज) शब्द – पत्थर, फावड़ा, लोटा, घोंसला

2. विदेशी शब्द – खर्च, ईमानदार, कैमरा, पुलिस

3. रूढ़ शब्द – मोर, तोत, रात, चाँद

4. यौगिक शब्द – वायुयान, डाकघर, विद्यालय, देशवासी

5. योगरूढ़ शब्द – पीतांबर, चारपाई, लंबोदर, चतुर्भुज

6. विकारी शब्द – घोड़ा, बच्चा, लड़का, किताब

## 4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, व्यक्ति, स्थान, वस्तु, गुण, भाव, अवस्था आदि का नाम बताने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा**– किसी जाति या वर्ग का बोध कराने वाले शब्दों (नामों) को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण– लड़का, हाथी आदि।

**व्यक्तिवाचक संज्ञा**– जिस शब्द (नाम) से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण– दिल्ली, महात्मा गाँधी आदि।

3. जिस शब्द से गुण, दशा, अवस्था या भाव आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण– खुश, दुखी, बुढ़ापा आदि।

4. **समूहवाचक संज्ञा**– जिस शब्द से किसी समूह या समुदाय को बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण– सेना, कक्षा आदि।

**द्रव्यवाचक संज्ञा**– जिस शब्द से किसी पदार्थ का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण – दूध, पानी, हीरा आदि।

(ख) 1. समीर, ताजमहल, मुंबई 2. दल, सभा, भीड़ 3. हाथी, लड़की, पर्वत
4. वीरता, बचपन, ईमानदारी 5. ताँबा, सोना, लोहा

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. हिरन – जातिवाचक संज्ञा 2. दिल्ली – व्यक्तिवाचक संज्ञा
3. कायरता – भाववाचक संज्ञा 4. बुराई – भाववाचक संज्ञा
5. चाँदी – द्रव्यवाचक संज्ञा 6. सेना – समूहवाचक संज्ञा
7. ताजमहल – व्यक्तिवाचक संज्ञा 8. हरिद्वार – व्यक्तिवाचक संज्ञा
9. सुंदरता – भाववाचक संज्ञा 10. झुंड – समूहवाचक संज्ञा
11. लोहा – द्रव्यवाचक संज्ञा 12. लड़की – जातिवाचक संज्ञा

(ङ)

| शब्द | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| बूढ़ा | बूढ़ापा |
| कड़वा | कड़वाहट |
| चालाक | चालाकी |
| कमाना | कमाई |
| शत्रु | शत्रुता |
| अपना | अपनापन |

| शब्द | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| स्वस्थ | स्वस्थ्य |
| पंडित | पांडित्य |
| नौकर | नौकरी |
| करूण | करूणा |
| मीठा | मिठास |
| श्रेष्ठ | श्रेष्ठता |

## 5. लिंग

(क) 1. जो शब्द पुरुष (नर) जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिग कहलाते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

3. सभी पदार्थों को दो वर्गों में बाँटा गया है– सजीव तथा निर्जीव।

4. लिंग के दो प्रकार हैं– (i) स्त्रीलिंग (ii) पुल्लिग

5. जो शब्द स्त्री (मादा) जाति का बोध कराते हैं, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

(ख)

| स्त्रीलिंग | पुल्लिग |
|---|---|
| बहन | भाई |
| रानी | राजा |
| वधू | वर |
| मौसी | मौसा |

| स्त्रीलिंग | पुल्लिग |
|---|---|
| पत्नी | पति |
| छात्रा | छात्र |
| पंडिताइन | पंडित |
| युवती | युवक |

(ग)

| पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
|---|---|
| लड़का | लड़की |
| गायक | गायिका |
| घोड़ा | घोड़ी |
| ताऊ | ताई |

| पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
|---|---|
| कवि | कवयित्री |
| धोबी | धोबिन |
| अभिनेता | अभिनेत्री |
| हाथी | हथिनी |

(घ) **पुल्लिग**– पलंग, युवक, ससुर, बकरा

**स्त्रीलिंग**– दुकान, घोड़ी, कवयित्री, दादी, शेरनी, पुस्तक

## 6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के एक अथवा एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

2. जब हम किसी व्यक्ति के प्रति आदर प्रकट करते हैं तो शब्द के बहुवचन रूप का प्रयोग करते हैं।

3. **एकवचन**– शब्द के जिस रूप से एक प्राणी या एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। उदाहरण– घोड़ा, माला आदि।

**बहुवचन**– शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। उदाहरण– घोड़े, मालाएँ आदि।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग)

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| घोड़ा | घोड़े |
| आँख | आँखें |
| सखी | सखियाँ |
| डिबिया | डिबियाँ |
| कमरा | कमरे |
| बहन | बहनें |

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| मिठाई | मिठाइयाँ |
| वस्तु | वस्तुएँ |
| थैला | थैले |
| इच्छा | इच्छाएँ |
| दासी | दासियाँ |
| वधू | वधुएँ |

(घ)

| बहुवचन | एकवचन |
|---|---|
| चूहे | चूहा |
| टाँगें | टाँग |
| खटियाँ | खटिया |
| लौकियाँ | लौकी |
| मालाएँ | माला |
| कथाएँ | कथा |

| बहुवचन | एकवचन |
|---|---|
| बहुएँ | बहु |
| शीशे | शीशा |
| बच्चों | बच्चा |
| नीतियाँ | नीती |
| ऋतुएँ | ऋतु |
| लताएँ | लता |

## 7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं। इसके भेद व उदाहरण निम्नलिखित हैं–

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम – मैं, तुम, वह आदि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम – यह, वह, ये आदि।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई, कुछ, आदि।

(iv) संबंधवाचक सर्वनाम – जैसा, वैसा, जो, सो आदि।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम – क्या, कौन, कब आदि।

(vi) निजवाचक सर्वनाम – स्वयं, अपने आप आदि।

3. **संबंधवाचक सर्वनाम**– जो सर्वनाम शब्द दो बातों में संबंध जोड़ते हैं, वे संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरण– जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

4. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरण–तुम क्या कर रहे हो?

(ख) 1. आप 2. कोई 3. क्या 4. इधर 5. स्वयं

(ग) 1. जैसा, वैसा – संबंधवाचक सर्वनाम

2. अपने आप – निजवाचक सर्वनाम

3. वह – पुरुषवाचक सर्वनाम

4. कौन – प्रश्नवाचक सर्वनाम

5. कुछ – अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(घ) 1. यह मेरा घर है। 2. तुम क्या कर रहे हो?

3. आप मेरे घर आ जाओ। 4. मैं बाजार जा रही हूँ।

5. कुर्सी के नीचे कुछ रखा है।

(ङ) नितिन सिटी लुक पब्लिक स्कूल में पढ़ता है। वह पतला लड़का है। वह पढ़ने में होशियार है। वह खेल में सबसे आगे है। वह अपनी माता जी के साथ बाज़ार जाता है। वह बड़ों का आदर करता है। वह बहुत थोड़े समय के लिए टी.वी. देखता है।

## 8. क्रिया

(क) 1. जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट होता है, उसे क्रिया कहते हैं। उदाहरण– बच्चा लिख रहा है।

2. क्रिया के दो भेद हैं–

**सकर्मक क्रिया**– जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण– गाय घास खाती है।

**अकर्मक क्रिया**– जिस क्रिया के साथ कर्म नहीं होता, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण– बच्चा रोता है।

3. सकर्मक क्रिया के पाँच उदाहरण—

(i) सुधा पत्र लिखती है। (ii) बच्चे दूध पीते हैं।

(iii) दादा जी अखबार पढ़ते हैं। (iv) माँ खाना पका रही है।

(v) वे बाजार गए हैं।

अकर्मक क्रिया के पाँच उदाहरण—

(i) बकरी खाती है। (ii) छात्रा लिखती है।

(iii) बालक रो रहा है। (iv) घोड़ा दौड़ता है।

(v) वे जाते हैं।

4. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓

(ग) धोना – धुलवाता, पढ़ना – पढ़वाता, मिलना – मिलवाता,
लड़ना – लड़वाता, चढ़ाना – चढ़वाता, उठाना – उठवाता

(घ) 1. पढ़ रहा – सकर्मक क्रिया 2. खा रही – अकर्मक क्रिया

3. सोता – अकर्मक क्रिया 4. चला रहा – सकर्मक क्रिया

5. सिल रहा – सकर्मक क्रिया

(ङ) 1. दौड़ता – दौड़ 2. पढ़ता – पढ़ 3. जाता – जा 4. लिखा – लिख 5. खाएगी – खा

## 9. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरण— **पतला** लड़का।

2. विशेषण के पाँच भेद हैं, जिनके नाम उदाहरण सहित इस प्रकार हैं—

(i) गुणवाचक विशेषण – यह **सुंदर** फूल है।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण – मुझे **थोड़ा** पानी चाहिए।

(iii) संख्यावाचक विशेषण – ये **पाँच** किताबें हैं।

(iv) संकेतवाचक विशेषण – वह **रवि** का घर है।

(v) व्यक्तिवाचक विशेषण – **बनारसी** साड़ियाँ बहुत पसंद की जाती हैं।

3. जो शब्द संज्ञा से पूर्व आकर उसकी ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं। उदाहरण– ये बच्चे बहुत पढ़ते हैं।

4. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे शब्द विशेष्य कहलाते हैं। उदाहरण– थोड़ा **दूध**, काला **कौआ**।

5. **परिमाणवाचक विशेषण**– जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। उदाहरण – मुझे **थोड़ा** पानी चाहिए।

**संख्यावाचक विशेषण**– जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। उदाहरण– वे **तीन** आदमी हैं।

(ख) 1. मीठा 2. गोल 3. कठोर 4. गुलाब जामुन 5. चार

(ग) ठंडा, पाँच, वीर, नमकीन, बहुत, तीन किलो, कुछ, बंगाली

(घ) **मूलावस्था**– प्रिय, योग्य, लंबा

**उत्तरावस्था**– निम्नतर, अधिक मीठा, कठिनतर

**उत्तमावस्था**– अधिकतम, सबसे अधिक छोटा, श्रेष्ठतम, सबसे अधिक अच्छा

(ङ) 1. काला 2. गरीब 3. सुंदर 4. दस मीटर

(च) धन-धनी, संसार-सांसारिक, दया-दयालु, नियम-नियमित, रंग-रंगीन, सम्मान-सम्मानित, चमक-चमकीला, बल-बलवान, भारत-भारतीय, रोब-रोबिला, धर्म-धार्मिक, कृपा-कृपालु, अभिमान-अभिमानी, नाटक-नाटकीय, झगड़ा-झगड़ालु

## 10. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो अन्य शब्दों विशेषत: क्रिया से अपना संबंध प्रकट करता है, कारक कहलाता है।

2. कारक के आठ भेद हैं–

(i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक

(iii) करण कारक (iv) संप्रदान कारक

(v) अपादान कारक (vi) संबंध कारक

(vii) अधिकरण कारक (viii) संबोधन कारक

3. शब्द के जिस रूप से कार्य के करने वाले (कर्ता) का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। उदाहरण– मंयक **ने** पुस्तक पढ़ी।

4. **कर्म कारक**– जिस वस्तु या व्यक्ति पर क्रिया का प्रभाव या फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। उदाहरण– माता **भोजन** बनाती हैं।

**संप्रदान कारक**– वाक्य में जिसके लिए क्रिया की जाती है या जिसे कुछ दिया जाता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। उदाहरण– रवि ने **दक्ष को** कलम दी।

(ख) 1. को 2. के द्वारा 3. के लिए 4. में 5. से

(ग) 1. ने 2. से 3. से 4. की 5. पर

(घ) 1. नदी पहाड़ों <u>से</u> निकल रही है।

2. चिड़ियाँ पेड़ <u>पर</u> बैठी हैं।

3. लड़का भगवान <u>से</u> प्रार्थना कर रहा है।

## 11. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का पता चलता है, उस समय को काल कहते हैं।

2. काल के तीन भेद होते हैं– (i) वर्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविष्यत् काल

3. क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय (अब चल रहे समय) में होने का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण– हम सब पढ़ते हैं।

4. क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण– (i) मैं बस से स्कूल जाता था।

(ii) विभोर कल ताजमहल देखने गया।

5. क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में होने का बोध होता है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण- मेघा खाना खाएगी।

(ख) 1. वर्तमान काल 2. भविष्यत् काल

3. भूतकाल 4. भविष्यत् काल

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. हम सरकस देखने जाएँगे 2. सचिन सच बोलता है।

3. विवेक गाना गायेगा। 4. रंजन खाना खा रहा था।

5. पेड़ पर कोयल बैठी थी। 6. तुम सब कहाँ गये थे

## 12. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. जो शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं, वे पर्यायवाची या समानार्थक शब्द कहलाते हैं। उदाहरण- सूर्य, सूरज, रवि, भानु।

2. पर्यायवाची शब्द का अन्य नाम समानार्थक है।

(ख) मछली - मत्स्य, मीन सूरज - रवि, भानु

कमल - जलज, सरोज

(ग) 1. ईश्वर - प्रभु, जगदीश; 2. उद्यान - वाटिका, उपवन;

3. मनुष्य - नर, मनुज; 4. गणपति - गणेश, विनायक;

5. पत्नी - भार्या, अर्धांगिनी

(घ) 1. हाथी - गज, हस्ती, कुंजर

2. प्रभु - ईश्वर, जगदीश, भगवान

3. झंडा - ध्वज, पताका, केतु

4. पत्थर - शिला, पाषाण, पाहन

5. आग - अग्नि, अनल, पावक

6. घर - सदन, गृह, आवास

7. भूमि - धरा, पृथ्वी, धरती

8. पुत्री - बेटी, तनया, आत्मजा

9. गणेश - गजानन, लंबोदर, गणपति

(ङ) 1. पृथ्वी 2. अंबु 3. शैल 4. कलम 5. कलिका

## 13. विलोम शब्द

(क) 1. जो शब्द एक-दूसरे का ठीक उल्टा अर्थ प्रकट करते हैं, वे विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं।

2. नहीं, सभी शब्द एक-दूसरे का उल्टा अर्थ प्रकट नहीं करते हैं।

(ख)

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| आर्द्र | शुष्क |
| अंधकार | प्रकाश |
| अवनति | उन्नति |
| कटु | मधुर |
| कृतज्ञ | कृतघ्न |
| शासक | शासित |

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| आय | व्यय |
| आयात | निर्यात |
| जीत | हार |
| दुर्जन | सज्जन |
| प्रवृति | निवृत्ति |
| हिंसा | अहिंसा |

(ग) उत्तम, सम्मान, प्राचीन, परलोक, प्रशंसा, सेवक

(घ) अमृत – विष, कठिन – सरल, आदान – प्रदान, आस्तिक – नास्तिक, भक्षक – रक्षक, परतंत्र – स्वतंत्र

(ङ) 1. बाएँ से दाएँ – 1. सफल 2. दुर्गंध 3. चंचल 4. वाचाल

ऊपर से नीचे – 1. सधवा 2. दुर्बल 3. चालाक

## 14. विराम चिह्न

(क) 1. लिखते समय रूकने का संकेत देने तथा कथन का आशय समझने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

2. जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, उसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

3. जब दो वाक्यों के मध्य अल्प विराम लगाने से अर्थ में भ्रांति उत्पन्न होने की आशंका हो, तो वहाँ अर्ध विराम लगाया जाता है।

4. वाक्य में अर्थ को स्पष्ट करने लिए जहाँ थोड़ा रुकना आवश्यक हो, वहाँ अल्प विराम लगाया जाता है।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | । | – पूर्ण विराम | 2. | ? | – प्रश्नवाचक चिह्न |
| 3. | ; | – अर्ध विराम | 4. | “ ” | – दोहरा उद्धरण चिह्न |
| 5. | ( ) | – कोष्ठक | 6. | ‘ ’ | – इकहरा उद्धरण चिह्न |

(घ) 1. मैं घर जा रहा हूँ। 2. तुम्हारा नाम क्या है?

3. वाह! कितना मनमोहक दृश्य है। 4. तिलक ने कहा था, ‘‘स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।’’

5. जीवन में सुख-दुख तो आते ही रहते हैं।

(ङ) अल्पविराम ( , )

1. तोता, मैना और चिड़िया पक्षी है।
2. रोहन ने कहा, कि वह वहाँ नहीं जाएगा।
3. मीना, रीना और नेहा मेले गई।
4. उसने कहा, कि वह सच बोल रहा है।
5. तुम, साहिल और मैं साथ चलेंगे।

अर्धविराम ( ; )

1. वह चाहे न जाए; लेकिन मैं तो अवश्य जाऊँगा।
2. सुरेश ने खाना खाया; लेकिन मोहन ने नहीं खाया।
3. मैंने उसे बातें करते देखा; इसीलिए वह सही कह रहा है।
4. मोना गा रही थी; जबकि नीलम नाच रही थी।
5. सुनैना घर से तो निकली: पर समय से समारोह नहीं पहुँची।

योजक चिह्न ( - )

1. हम रात-दिन काम करते हैं।
2. जीवन में सुख-दुख तो आते ही रहते हैं।
3. दोनों बातें अलग-अलग हैं।
4. भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षी बैठे हैं।
5. इधर-उधर मत दोड़ों।

लाघव चिह्न ( ० )

1. डा० रोगी को दवा दे रहे हैं।
2. मि० शर्मा घूम रहे हैं।
3. स०रा० अमेरिका एक विकसित देश है।
4. उ०प्र० की राजधानी लखनऊ है।
5. पं० मदन मोहन मालवीय महान व्यक्ति थे।

## 15. मुहावरे

(क) 1. मुहावरे वे शब्द समूह हैं, जिनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में होता है।

2. मुहावरे का प्रयोग भाषा को अधिक रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।

(ख) अँगूठा छाप होना - अनपढ़ होना

उल्लू सीधा करना - स्वार्थ पूरा करना

आस्तीन का साँप – विश्वासघाती

कान भरना – झूठी शिकायतें करना

आँखों का तारा – बहुत प्यारा

(ग) आग बबूला होना – बहुत गुस्सा होना

आँखे दिखाना – क्रोध करना

कलई उतरना – भेद प्रकट होना

नाक कटना – इज्जत चली जाना

अंधे की लकड़ी – एक मात्र सहारा

ईद का चाँद होना – बहुत दिनों बाद दिखाई देना

घाव पर नमक छिड़कना – परेशान को और परेशान करना

हाथ-पाँव फूलना – घबरा जाना

(घ) 1. **क्रोध को बढ़ावा देना–** पिताजी मुझसे पहले ही नाराज थे तुमने मेरी शिकायत करके **आग में घी डाल** दिया।

2. **ध्यान न देना –** रोहन को सब पढ़ने के लिए समझाते रहते हैं लेकिन उसके **कान पर जूँ नहीं रेंगती**।

3. **पराजित करना –** भारतीय सैनिकों ने आतंकवादियों के दाँत खट्टे कर दिये।

4. **बहुत शोर मचाना –** शिक्षक के कक्षा से जाते ही बच्चों ने **आसमान सिर पर उठा लिया**।

## 16. शुद्ध करना ( शब्द तथा वाक्य )

(क) 1. राम और सीता पति-पत्नी थे।

2. इस पुस्तक का मूल्य पचास रुपये है।

3. आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।

4. झूठ बोलने से हानि होती है।

5. उज्ज्वल सवेरे विद्यालय गया था।

(ख) 1. पेड़ पर कबूतर बैठा है। 2. मुझे तुम्हारी किताब लौटानी है।

3. तुम्हें कहाँ जाना है? 4. सब बच्चे कहाँ गये हैं?

5. मनोज बुद्धिमान व्यक्ति है।

(ग) 1. सूर्य, गुरु, प्रभु, आसान, पैसा, उज्ज्वल, स्नान, पत्थर

(घ) प्रतीक्षा, निश्चित, सवेरा, यज्ञ, कविता, श्लोक, पालतू, साधु, पूर्व, सामाजिक, सड़क, शुरू

## 17. पत्र लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

## 18. कहानी-लेखन

(क) **दबा हुआ खजाना**

एक किसान था। उसके चार बेटे थे और चारों बेटे बहुत ही आलसी थे। वह कुछ भी कामकाज नहीं करते थे। किसान दिन भर अपने खेत में काम करता था और कोई भी लड़का उसका हाथ बटाँने नहीं आता था। किसान बहुत चिंतित रहता था कि उसके मरने के बाद उसके चारों बेटों का क्या होगा। यही बात उसे दिन-रात खाए जाती थी। एक दिन किसान बहुत बीमार हो गया। उसे पता चल गया कि अब उसका अंतिम समय निकट है। उसने अपने चारों बेटों को बुलाया और कहा कि— मैं जानता हूँ मेरे मरने के बाद तुम चारों कुछ नहीं करोगे, तुम्हारे खाने-पीने का भी ठिकाना नहीं रहेगा, इसीलिए मैंने खेत में बहुत सारा धन छुपा कर रखा हुआ है, तुम वह धन खोजकर निकाल लेना और अपनी जिंदगी को आराम से जीना। इतना कहने के बाद किसान की मृत्यु हो गई और किसान के चारों बेटे बहुत दुखी हुए, परंतु अब क्या हो सकता था। कुछ दिन तो वह घर में रखा हुआ अनाज खाते रहे। लेकिन आखिर में वह भी खत्म हो गया उन्होंने सोचा अब तो हमें खेत को खोदकर खजाना निकालना ही पड़ेगा। इसके आलावा अब कोई भी उपाय हमारे पास नहीं बचा है। ऐसा सोचकर चारों बेटे सुबह उठे और खेत को खोदने पहुंच गये। खेत बहुत बड़ा था और उनमें से किसी को भी इस बात का पता नहीं था कि खजाना खेत के किस हिस्से में छुपा हुआ है। जिस कारण उन्हें पूरा खेत खोदना पड़ा। यह क्रम चार-पाँच दिन तक चलता रहा। चारों बेटे सुबह उठते और खजाने के लालच में खेत को खोदते रहते। आखिर में उन्होंने सारा खेत अच्छे से खोद दिया। लेकिन उन्हें खजाना कहीं भी नहीं मिला। वह बहुत दुखी हुए। फिर उन्होंने सोचा जब हमने इतनी मेहनत कर ही ली तो क्यों न अब हम खेत में बीज ही डाल दें। जिससे फसल ही हो जाएगी और हम वह फसल बेच कर कुछ पैसे कमा लेंगे। जिससे हमें भोजन प्राप्त होगा, आगे की फिर आगे देखेंगे। ऐसा सोचकर चारों ने मिलकर बीज बोए और खेत की बहुत ही अच्छे से देखभाल करने लगे। धीरे-धीरे उनका आलस कम होने लगा जैसे-जैसे फसल बढ़ने लगी परिश्रम का महत्व उसे देख कर चारों बेटे हर्षाने लगे। उन्हें पता चल गया।

**शिक्षा-** मेहनत का फल मीठा होता है।

(ख) **चतुर खरगोश**

किसी जंगल में एक शेर रहता था। वह हमेशा जंगल में रहने वाले जानवरों को मारकर खा जाता था। इस कारण जंगल के सभी जीव-जंतुओं को शेर से बहुत डर लगता था।

एक बार सभी जानवरों ने मिलकर शेर के साथ समझौता कर लिया कि प्रतिदिन एक पशु शेर के भोजन के लिए स्वयं उसके पास चला आएगा। शेर यह बात मान गया। उस दिन से रोज एक जानवर अपनी बारी से शेर के पास पहुँच जाता और दूसरे जानवर बिना डर के जंगल में घूमते।

एक बार खरगोश की बारी आई। वह धीरे-धीरे शेर के पास जा ही रहा था कि अचानक रास्ते में उसे एक तरकीब सूझी। वह बहुत देर करके शेर के पास पहुँचा। शेर भूखा होने के कारण बेचैन अपनी गुफा के बाहर चक्कर लगा रहा था। खरगोश को देखते ही शेर गरजा और बोला, ''अरे खरगोश! तुम इतनी देर से क्यों आए हो? भूख से मेरी जान निकली जा रही है।''

खरगोश बोला, ''महाराज! क्या बताऊँ, हम पांच भाई आपकी सेवा के लिए आ ही रहे थे, परंतु रास्ते में एक दूसरा शेर मिल गया। वह बोला कि वह जंगल का राजा है। उसने हम पर हमला कर दिया और मेरे भाइयों को खा गया। महाराज, मैं किसी तरह अपनी जान बचाकर आपको यह संदेश देने पहुँचा हूँ।'' यह बात सुनकर शेर बहुत क्रोधित हुआ और बोला, ''कहाँ है वह दुष्ट, जो अपने आप को राजा बता रहा है। मुझे दिखाओ, मैं अभी उसका काम तमाम करता हूँ।''

खरगोश, शेर को कुएं के पास ले गया। जब शेर ने कुएं में झांका तो उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी। उसे दूसरा शेर समझकर वह जोर से गरजा और क्रोधित होकर उसने कुएं के अंदर छलांग लगा दी परंतु उस कुएं के अंदर कोई दूसरा शेर था ही नहीं। वहाँ तो केवल जल ही जल था।

बाहर निकलने का कोई रास्ता भी नहीं था। शेर बहुत देर तक पानी के अंदर ही छटपटाता रहा और डूब कर वहीं मर गया। इस प्रकार नन्हे खरगोश ने अपनी चतुराई से अपनी तथा अन्य साथियों की जान बचाई।

**शिक्षा-** बुद्धि और विवेक के बल पर कोई भी कार्य संभव है।

## 19. निबंध-लेखन

विद्यार्थी अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

# व्याकरण भाग - 4

## 1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तथा दूसरों के भावों और विचारों को सुनकर तथा पढ़कर समझ सकते हैं।

2. भाषा के दो प्रकार होते हैं-

(i) मौखिक भाषा (ii) लिखित भाषा।

3. मनुष्य अपने विचार एवं भाव को अन्य व्यक्ति के सामने व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है।

4. **मौखिक भाषा**- जब हम अपने विचार मुख से बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तो भाषा का यह रूप मौखिक भाषा कहलाता है।

**लिखित भाषा**- जब हम अपने विचार लिखकर प्रकट करते हैं तो भाषा का यह रूप लिखित भाषा कहलाता है।

5. भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कुछ संकेतों, चिह्नों व ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है। इन संकेतों, चिह्नों तथा ध्वनियों का समूह लिपि कहलाता है।

6. भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है।

7. व्याकरण वह विद्या है, जिसके अध्ययन से हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है।

(ख) 1. अंग्रेजी 2. बोलने में सक्षम 3. बोली 4. गुरुमुखी 5. भाषा

(ग) 1. हिंदी भाषा → (i) देवनागरी लिपि

2. अंग्रेजी भाषा → (ii) रोमन लिपि

3. पंजाबी भाषा → (iii) गुरुमुखी लिपि

4. उर्दू भाषा → (iv) फारसी लिपि

(घ) 1. हिंदी 2. उर्दू 3. अंग्रेजी 4. ब्रजभाषा 5. पंजाबी 6. राजस्थानी 7. संस्कृत 8. हरियाणवी

(ङ) 1. मराठी 2. उर्दू 3. गुजराती 4. उड़िया 5. असमी 6. कश्मीरी 7. मलयालम

## 2. वर्ण विचार

(क) 1. वर्ण भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि है जिसके और टुकड़े नहीं किये जा सकते।

2. हिंदी की वर्णमाला में तीन प्रकार के वर्ण हैं- स्वर, व्यंजन और अयोगवाह।

3. स्वर के दो प्रकार होते हैं- (i) ह्रस्व स्वर (ii) दीर्घ स्वर।

4. ह्रस्व स्वर के उदाहरण– रमन, रिति, गुरु, ऋषि, दृग।

5. दीर्घ स्वर संख्या में सात होते हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

6. जो वर्ण स्वर की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं- (i) स्पर्श व्यंजन (ii) अंत:स्थ व्यंजन तथा (iii) ऊष्म व्यंजन।

7. स्पर्श व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुँह के किसी एक भाग को स्पर्श करती है और इनकी संख्या 25 है। जबकि उष्म व्यंजन में वायु तेज गति से बाहर निकलती है और ये संख्या में केवल 4 हैं।

8. वे वर्ण जो न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन, उन्हें अयोगवाह कहते हैं। अं और अ: वर्ण अयोगवाह हैं।

(ख) 1. वर्ण 2. तीन 3. ह्रस्व स्वर 4. व्यंजन 5. व्यंजनों, द्वित्व

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ)

| | |
|---|---|
| क़ और ज़ | नुक्तायुक्त वर्ण |
| ड़ और ढ़ | अतिरिक्त व्यंजन |
| अं और अ: | अयोगवाह |
| क्ष और त्र | संयुक्त व्यंजन |
| क्क और ड्ड | द्वित्व व्यंजन |

(ङ) स्वर - अ, इ, उ, ऊ, ऋ, ऐ, औ

व्यंजन - क, घ, ङ, झ, ठ, ण, थ, व, र, ह

(च) 1. बालक — ब् + आ + ल् + अ + क् + अ

2. विद्यालय — व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

3. कलम — क् + अ + ल् + अ + म् + अ

4. गमला — ग् + अ + म् + अ + ल् + आ

5. तालाब — त् + आ + ल् + आ + ब् + अ

6. कॉफी — क् + ॅ + फ् + ई

7. बच्चा — ब् + अ + च् + अ + च् + आ

8. लज्जा — ल् + अ + ज् + अ + ज् + आ

(छ) 1. खग, कल, तट, धन, चमन

2. लाल, वट, राजा, यात्रा, राह

3. ज़रूरत, चीज़, ताज़ा, मुफ्ती, मज़दूर

4. मक्का, पक्का, सज्जन, गद्, रस्सी

5. श्रीमान, शशि, क्षत्रिय, श्रम, ज्ञान

## 3. शब्द विचार

(क) 1. दो या अनेक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

2. शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है—

(i) उत्पत्ति के आधार पर (ii) बनावट के आधार पर

(iii) अर्थ के आधार पर (iv) प्रयोग के आधार पर

3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं-

(i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द

(iii) देशज शब्द (iv) विदेशी शब्द

4. वे शब्द जो मूल रूप से संस्कृत के हैं और हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों प्रयोग हो रहे हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

5. बनावट या रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं-

(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

6. अर्थ के आधार पर शब्द के निम्नलिखित भेद होते हैं—

(i) एकार्थी शब्द (ii) अनेकार्थी शब्द

(iii) समानार्थी शब्द (iv) विपरीतार्थी शब्द

7. प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(i) विकारी शब्द (ii) अविकारी शब्द

(ख) गुण – अवगुण, अपमान – सम्मान, वर – वधु, स्वार्थ – निस्वार्थ, जन्म – मरण, उत्थान – पतन

(ग) आँख – नेत्र, अग्नि – आग, जंगल – वन, पुत्री – बेटी, मेघ – बादल, साँप –सर्प

(घ) **देशज शब्द**- सरपट, घोंसला, पगड़ी, पत्थर, साफ, परवल, सड़क, आटा, लोटा

**अंग्रेजी शब्द**- बस, टाई, नर्स

(ङ) **तत्सम शब्द**- चर्म, क्षिमा, दुग्ध, कोकिला, पृष्ठ, लौह तृण

**तद्भव शब्द**- पत्ता, घर, बूढ़ा, ग्राहक, मौत, दूध, पत्र, वृद्ध, खंबा

## 4. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, व्यक्ति, स्थान, वस्तु, गुण, भाव, अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं।

2. संज्ञा के तीन भेद हैं—

(i) जातिवाचक संज्ञा (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा

3. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**- जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान आदि का बोध हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे— राम, महात्मा गांधी आदि।

4. **भाववाचक संज्ञा-** जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ के गुण, दोष, अवस्था या दशा

का बोध हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सुंदरता, हँसी, वीरता, मित्रता, साहस, लंबाई आदि।

5. **समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा**– जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के समूह का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– दल, झुंड, भीड़, सेना, सभा आदि।

6. जिन संज्ञा शब्दों के अंत में पन, ता, त्व, आपा (पा), आहट (हट), आवट (वट), ई आदि वर्ण या शब्द जुड़े हों, वे शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं; जैसे— लड़कपन, अकड़पन; महानता, पशुता; अपनत्व, मनुष्यत्व; मोटापा, बुढ़ापा; मुस्कुराहट, घबराहट; बनावट, लिखावट; चौड़ी, सर्दी, चौड़ाई, बड़ाई आदि।

(ख) 1. भाववाचक संज्ञा 2. भाववाचक संज्ञा 3. स्थानों 4. जातिवाचक 5. द्रव्यवाचक

(ग) 1. आगरा, ताजमहल – व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. मोटापा – भाववाचक संज्ञा
3. भारत – व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. सेना – समूहवाचक संज्ञा
5. हीरा – द्रव्यवाचक संज्ञा

(घ)

| | | |
|---|---|---|
| देव – देवत्व, | मानव – मानवता, | निज – निजत्व, |
| पराया – परायापन, | बंध – बंधुत्व, | ईमान – ईमानदारी, |
| अच्छा – अच्छाई, | कम – कमी, | पढ़ना – पढ़ाई, |
| रुकना – रूको, | जागना – जागरण, | बहुत – बहुतायत, |
| अहं – अहंकार, | ऊंचा – ऊँचाई, | थकना – थकावट |

(ङ) दासता, मातृत्व, पशुता, सर्वस्व, कटुता, प्यासा, बुनाई

## 5. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। उदाहरण– शेर–शेरनी, बंदर–बंदरिया आदि।

2. **पुल्लिंग**– शब्द के जिस रूप से पुरुष या नर जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे– आदमी, बच्चा, बैल, मोर, हाथी, बंदर, नाग आदि।

2. **स्त्रीलिंग**– शब्द के जिस रूप से स्त्री या मादा जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे– औरत, बच्ची, गाय, मोरनी, हथिनी, बंदरिया, नागिन, आदि।

3. **नदियों के नाम–** गंगा, यमुना, सरस्वती, व्यास, कृष्णा, कावेरी आदि।
**झीलों के नाम**– पुष्कर, वूलर, मानसरोवर, चिल्का आदि।
**बोलियों के नाम**– ब्रज, सिंधी, उड़िया, आदि।
**तिथियों के नाम –** एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि।
**खेलों के नाम** – टेनिस, हॉकी, फुटबॉल आदि।

4. (i) **दिनों के नाम–** सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार आदि।

(ii) **महीनों के नाम–** मार्च, अप्रैल, अगस्त, दिसंबर आदि।

(iii) **देशों के नाम–** भारत, पाकिस्तान, रूस, अफ्रीका आदि।

(iv) **राज्यों के नाम–** हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि।

(v) **महाद्वीपों के नाम–** एशिया, अफ्रीका, यूरोप, उत्तरी अमेरिका आदि।

(ख) लड़का – लड़की, बच्चा – बच्ची, वृद्ध – वृद्धा, नाती – नातिन, नायक – नायिका, सिंह – सिंहनी

(ग) नागिन – नाग, औरत – मर्द, महोदया – महोदय, युवती – युवक, माता – पिता, पत्नी – पति

(घ) ग्वाला – पुल्लिग, सेविका – स्त्रीलिंग, ऊँट – पुल्लिग, मास्टर – पुल्लिग, लोटा – पुल्लिग, पंडिताइन – स्त्रीलिंग

(ङ)

| पुल्लिग | स्त्रीलिंग | पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|
| आचार्य | महोदया | सीसा | लुटिया |
| नर | मौसी | टेनिस | दया |
| सेवक | लेखिका | अप्रैल | |
| नायक | डिबिया | सूर्य | |
| नौकर | उड़िया | बृहस्पति | |
| पुष्कर | | | |

(च) 1. हंसिनी जल में तैर रही है। 2. तपस्वी तपस्या कर रहा है।

3. कवयित्री कविता कह रही है। 4. सम्राट युद्ध कर रहा है।

## 6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के एक अथवा एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

2. वचन के दो भेद हैं– 1. एकवचन 2. बहुवचन

3. **एकवचन**– शब्द के जिस रूप से केवल एक प्राणी, वस्तु आदि का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे– लड़का, औरत, गधा, कुत्ता, पुस्तक, गेंद, चश्मा आदि।

**बहुवचन**– शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं आदि का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं: जैसे– लड़के, औरतें, गधे, कुत्ते, पुस्तकें, गेंदें, चश्मे आदि।

4. द्रव्यसूचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे–
घी, तेल, दूध, पानी, चाय आदि।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) चश्मे – चश्मा, बाँहें – बाँह, भाषाएँ – भाषा, चींटियाँ – चींटी, सखियाँ – सखी, बुढ़ियाँ – बुढ़िया, लुएँ – लू, जुँए – जूँ, कविताएँ – कविता

(घ) 1. तारे चमक रहे हैं। 2. मेज पर पुस्तक रखी है।

3. छात्राएँ पढ़ रही हैं। 4. गायें घास चर रही हैं।

(ङ) औरत - औरतें, पुस्तक - पुस्तकें, पंखा - पंखें, पंक्ति - पंक्तियाँ, गुड़िया - गुड़ियाँ, लड़का - लड़के

## 7. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं।

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) संबंधवाचक सर्वनाम

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा (vi) निजवाचक सर्वनाम

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम-** जो सर्वनाम शब्द निकट या दूर की किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति, प्राणी की ओर संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

(i) यह मेरी साइकिल है। (ii) वह कार है। (iii) वे मेरे माता-पिता हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में यह, वह, वे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

**अनिश्चयवाचक सर्वनाम**— जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— छत पर कोई बैठा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम-** जो सर्वनाम शब्द वाक्य में किसी संज्ञा या सर्वनाम से संबंध प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-

(i) जैसी करनी, वैसी भरनी। (ii) जो परिश्रम करेगा, वही सफल होगा।

(iii) जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम-** जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-

(i) तुम कहाँ जा रहे हो? (ii) दरवाजे पर कौन खड़ा है?

6. जो सर्वनाम शब्द कहने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति अथवा प्राणी के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद हैं-

**उत्तम पुरुष-** बात कहने वाला अपने लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहा जाता है; जैसे- मैं, मुझे, हम, हमें आदि।

**मध्यम पुरुष-** बात सुनने वाले के लिए बात कहने वाला जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे- तू, तुम, तुम्हें, तुमको, तुझको, आप, आपको आदि।

**अन्य पुरुष-** जिस व्यक्ति, प्राणी या वस्तु आदि के बारे में बात की जाती है, उसके लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे- वह, वे, उसे, उन्हें आदि।

(ख) **उत्तम पुरुष-** मैं, मुझे, हम, हमें

**मध्यम पुरुष-** तू, तुम्हे, तुझे, आपको

**अन्य पुरुष-** वह, वे, उसे, उन्हें

(ग) 1. कुछ - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
2. कौन - प्रश्नवाचक सर्वनाम
3. अपने आप - निजवाचक सर्वनाम
4. वह - निश्चयवाचक सर्वनाम
5. जो, वही - संबंधवाचक सर्वनाम

(घ) 1. क्यों 2. वैसा 3. मैं 4. वे 5. स्वयं

## 8. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरण— मैदान में दो घोड़े हैं।

2. विशेषण के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं—

(i) गुणवाचक विशेषण (ii) परिमाणवाचक विशेषण
(iii) संख्यावाचक विशेषण (iv) संकेतवाचक विशेषण
(v) व्यक्तिवाचक विशेषण

3. (i) नींबू खट्टा है। (ii) सृष्टि सुंदर है।

4. **परिमाणवाचक विशेषण-** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल बताते हैं, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— बाजार से चार मीटर कपड़ा लाओ।

**संख्यावाचक विशेषण**— जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— मेरी कक्षा में बीस छात्र हैं।

5. जो शब्द किसी संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

(i) यह लड़का कौन है? (ii) ये आम किसके हैं?

(ख) 1. बीस, पचास 2. यह, वे
3. नागपुरी, बनारसी 4. नमकीन, मधुर

(ग) 1. ज्यादा - परिमाणवाचक विशेषण, 2. पाँच - संख्यावाचक विशेषण,
3. इलाहबादी - व्यक्तिवाचक विशेषण, 4. मीठा - गुणवाचक विशेषण विशेषण,
5. वे - संकेतवाचक विशेषण

(घ) लालच – लालची, संसार – सांसारिक, सीमा – सीमित, ईश्वर – ईश्वरीय, नियम – नियमित, धर्म – धार्मिक, काँटा – कंटीला, रूप – रूपवान, भूत – भौतिक

## 9. कारक

(क) 1. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं।

2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध व्यक्त करने वाले शब्दों को कारक चिह्न या परसर्ग कहते हैं। 'विवेक ने मेहमान को पानी पिलाया' वाक्य में 'ने' और 'को' कारक चिह्न हैं।

4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'ने' है। जैसे- (i) विनय अखबार पढ़ रहा है।

(ii) रवि ने खाना खाया।

3. **कर्म कारक-** वाक्य में जिस वस्तु या व्यक्ति पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'को' है। जैसे- रवि अमित को पीटता है।

4. **कर्ता कारक-** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'ने' है। जैसे— विनय अखबार पढ़ रहा है।

5. **करण कारक-** वाक्य में कर्ता जिस साधन से क्रिया करता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' है। जैसे— नवीन कलम से लिखता है।

**अपादान कारक-** जिस शब्द से किसी वस्तु या व्यक्ति के अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'से' है। जैसे— नितिन छत से कूद गया।

6. जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में आये हुए अन्य संज्ञा शब्द से प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'का, के, की, रा, री, रे' है।

(ख) 1. को, 2. से, 3. ने, 4. में, 5. के लिए

(ग) 1. हम सब को घर जाना है।
2. वह मेरी बहन के लिए साड़ी लाया।
3. नेहा ने खाना खाया।
4. पेड़ से पत्ता गिरता है।
5. हम घर में थे।

(घ) 1. रोहन <u>ने</u> गीत गाया।
2. पेड़ <u>पर</u> मोर बैठा है।
3. पेड़ <u>से</u> फूल गिरते हैं।
4. चाकू <u>से</u> फल काटो।
5. रेखा <u>की</u> सहेली कहाँ है?

(ङ) 1. अरे, 2. से, 3. ने, 4. के लिए, 5. को

## 10. क्रिया

(क) 1. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

2. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। उदाहरण- लड़की खेल रही है।

3. **नामधातु क्रिया**– जो क्रियाएँ संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों से बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं; जैसे–

| संज्ञा | नामधातु क्रिया |
|---|---|
| लज्जा | लजाना |
| शरम | शरमाना |

**प्रेरणार्थक क्रिया**– जिस क्रिया में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य व्यक्ति को प्रेरित करके कार्य करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–

(i) पिता ने पुत्र से फल मँगवाए।

(ii) अखिल ने अक्षय से कहानी लिखवाई।

4. क्रिया के दो भेद होते हैं–

(i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया।

5. सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में कर्म दिया होता है, जैसे– छात्र पत्र लिखता है। जबकि अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में कर्म नहीं होता है। जैसे– छात्र लिखता है।

6. **सहायक क्रिया**– वाक्य में मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया सहायक क्रिया कहलाती है। जैसे– मैं विद्यालय जाता हूँ।

**संयुक्त क्रिया**– जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, वह संयुक्त क्रिया कहलाती है। जैसे– विनीत हँसने लगा।

(ख) 1. तुम्हें प्रतिदिन अखबार पढ़ना चाहिए। 2. शाम का खाना खाकर चलना चाहिए।
3. नेहा तुम्हें छत पर नहीं बैठना चाहिए। 4. मुझे क्रिकेट खेलना पंसद है।
5. बच्चे को गिरता देखकर हँसना नहीं चाहिए।

(ग) 1. सो रहा, अकर्मक क्रिया; 2. धोता, सकर्मक क्रिया,
3. सुनाता, सकर्मक क्रिया; 4. खा रहा, अकर्मक क्रिया
5. पत्र लिखा, सकर्मक क्रिया

(घ) 1. लिखूँगा, लिख; 2. पढ़ता पढ़; 3. खाया, खा; 4. देखा, देख; 5. लाएगा, लाया

(ङ) आसमान में काले बादल छा गए हैं।
डाली पर चिड़िया बैठी है।
हम सबने स्वादिष्ट भोजन किया।

## 11. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का बोध होता है, उस समय को काल कहते हैं।

2. काल के तीन भेद होते हैं–

(i) वर्तमान काल (चल रहा समय) (ii) भूतकाल (बीता हुआ समय)
(iii) भविष्यत् काल (आने वाला समय)

3. **वर्तमान काल**- (i) मैं घर जा रहा हूँ। (ii) तुम क्या कर रहे हो?
(iii) वह प्रतिदिन बाजार जाता है।

**भविष्यत् काल**- वह क्रिया जो भविष्य में होनी है, उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहा जाता है। जैसे— (i) हम कल जयपुर जायेंगे। (ii) तुम खाना कब खाओगे?
(iii) अमित दो दिन बाद आएगा।

(ख) 1. काल, 2. वर्तमान काल, 3. भूतकाल 4. भविष्यत् काल

(ग) 1. विनीत और अक्षत लड़ रहे थे।
2. नवीन बाजार जा रहा है।
3. प्रवीण दुकान पर जायेगा।
4. दीवार पर कबूतर बैठा है।

(घ) 1. भूतकाल 2. भविष्यत् काल 3. वर्तमान काल 4. भूतकाल

## 12. क्रिया विशेषण

(क) 1. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण— कछुआ धीरे चलता है।
2. क्रिया विशेषण के छः भेद होते हैं— (i) कालवाचक क्रिया विशेषण, (ii) स्थानवाचक क्रिया विशेषण, (iii) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, (iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण, (v) प्रश्नवाचक क्रिया विशेषण, (vi) निषेधवाचक क्रिया विशेषण।
3. जिस क्रियाविशेषण से क्रिया की रीति (विधि) ज्ञात होती है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे- धीरे, जोर-से, जल्दी आदि।
उदाहरण- नवीन धीरे चलता है।

(ख) 1. वह अभी यहाँ आया है। 2. रोहन जल्दी-जल्दी बोलता है।
3. हम दिल्ली नहीं गये थे। 4. मुझे वह पार्क अत्यंत सुंदर लगा।

(घ) 1. यहाँ, रीतिवाचक क्रियाविशेषण; 2. थोड़ा, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण; 3. परसों, कालवाचक क्रियाविशेषण।

(ग) 1. राहुल बहुत बोलता है। 2. तुम यहाँ आना।
3. वह अचानक आ गया। 4. गाड़ी जल्दी आ गई।

## 13. समुच्चयबोधक

(क) 1. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
2. ताकि, अर्थात्, अथवा, एवं, अन्यथा।

(ख) 1. इसलिए, 2. या

(ग) परंतु, अन्यथा, अर्थात्, बल्कि, ताकि, मानो, यानी, व, या, वरना

## 14. विस्मयादिबोधक

(क) 1. जो अविकारी शब्द हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, करुणा आदि भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

2. हर्षबोधक – वाह!, अहा!, शाबाश!, धन्य!, वाह-वाह! आदि।

शोकबोधक – हाय!, आह!, ओह!, हा!, आदि।

आश्चर्यबोधक – ओहो!, अरे!, वाह!, हैं!, ऐं!, क्या! आदि।

घृणाबोधक – छि!, धत्!, धिक! आदि।

तिरस्कारबोधक – हट!, चुप!, दुर! आदि।

स्वीकारबोधक – जी!, हाँ!, जी हाँ!, अच्छा!, ठीक! आदि।

अनुमोदनबोधक – ठीक!, अवश्य!, अच्छा!, हाँ-हाँ! आदि।

संबोधनबोधक – अरे!, हे!, रे!, हो! आदि।

आशीर्वादबोधक – जीते रहो!, दीर्घायु हो! आदि।

(ख) 1. वाह! 2. छि:! 3. जी हाँ! 4. अरे! 5. ओहो!

(ग)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | छि:! | कितनी गंदगी है। | 2. | दुर! | चले जाओ यहाँ से। |
| 3. | अवश्य! | मैं आज ही पत्र लिखूँगा। | 4. | वाह! | बहुत सुंदर मूर्ति बनाई है। |
| 5. | क्या! | आप सच कह रहे हो। | 6. | दीर्घायु! | प्रभु आपको लंबी आयु दे। |
| 7. | हाय! | ये कैसे हो गया। | | | |

(घ)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | धत्! | घृणाबोधक | 2. | हाँ-हाँ! | अनुमोदनबोधक |
| 3. | ओह! | शोकबोधक | 4. | धन्य! | हर्षबोधक |
| 5. | अच्छा! | स्वीकारबोधक | 6. | ओहो! | शोकबोधक |

## 15. विपरीतार्थक या विलोम शब्द

(क)

| शब्द | विलोम शब्द | शब्द | विलोम शब्द | शब्द | विलोम शब्द |
|---|---|---|---|---|---|
| दुर्भाग्य | सौभाग्य | पक्ष | विपक्ष | संधि | विग्रह |
| चर | अचर | गुप्त | प्रकट | मधुर | कटु |
| निरक्षर | साक्षर | सुगम | दुर्गम | | |
| अंश | पूर्ण | उत्थान | पतन | | |

(ख) 1. सुख 2. मित्र 3. पुण्य 4. आरंभ 5. उत्तर

(ग) प्रेम/घृणा – घृणा

संयोग/वियोग – जीवन में संयोग और वियोग होते ही रहते हैं।

गुप्त/प्रकट – यह गुप्त बात थी जो अब प्रकट हो गई है।

मौखिक/लिखित – मौखिक प्रश्न आसान थे और लिखित प्रश्न कठिन थे।

शांति/अशांति – इतनी अशांति के बाद आखिर शांति स्थापित हो गई।

## 16. पर्यावाची शब्द

(क) 1. भारती, शारदा, वीणापानि; 2. निधन, अवसान, देहांत; 3. शुक, सुआ, रक्ततुंड; 4. विद्वा, मनीषी, ब्राह्मण।

(ख) 1. पुहुप 2. चंद्रिका 3. अमर्ष

(ग) मयूर, केकी, सारंग
वानर, कपि, मर्कट
राजा, नरेश, नृप

## 17. शब्द-समूह के लिए एक शब्द

(क) 1. समीर और सौम्य सहपाठी हैं।
2. राम का चरित्र अनुकरणीय है।
3. समीर परोपकारी है।
4. भारत में प्रजातंत्र है।
5. ताजमहल दर्शनीय है।

(ख) चतुर्भुज – चार भुजाओं वाला
अतीत – बीता हुआ समय
अनाथ – जिसका कोई न हो
सत्यवादी – सदा सत्य बोलने वाला
सर्वज्ञ – जो सब कुछ जानता हो
समदर्शी – सबको समान समझने वाला

(ग) 1. देशप्रेमी 2. परोपकारी 3. अलौकिक 4. दूरदर्शी 5. अद्वितीय

(घ) 1. वंदनीय, 2. नास्तिक, 3. कृतज्ञ, 4. दर्शनार्थी, 5. अजर

(ङ) 1. अधिक बोलने वाला 2. जिसका भाग्य उज्ज्वल हो
3. जो दिखाई न दे 4. दोपहर से पहले का समय
5. जो कभी संभव न हो सके

## 18. विराम-चिह्न

(क) 1. लेखन में विराम (रुकने) का संकेत देने तथा कथन का आशय समझाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।
2. (i) तुम्हें जो खाना है, खाओ; लेकिन हमसे खाने के लिए मत पूछो।
(ii) वह विद्यालय जाएगा या नहीं; उसने मुझे नहीं बताया।
3. संयोजक या योजक चिह्न (-)— योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित रूपों में होता है—
(i) किसी शब्द की पुनरावृत्ति होने पर; जैसे— एक-एक, बार-बार, घर-घर आदि।

(ii) विपरीतार्थी शब्दों के मध्य में; जैसे—काला-सफेद, दिन-रात, ऊपर-नीचे आदि।

(iii) समान महत्व के समानार्थी शब्दों के मध्य में; जैसे—धन-दौलत, रिश्ते-नाते आदि।

4. अल्प विराम ( , )— वाक्य के बीच में जहाँ थोड़ा रुकना आवश्यक हो, वहाँ अल्प विराम लगाते हैं; जैसे— (i) नवीन, रोहन, तन्मय और दीपक मित्र हैं। (ii) मैं घर गया, खाना खाया, फिर सो गया।

(ख) 1. विस्मयादिबोधक 2. प्रश्नवाचक 3. विराम चिह्न 4. वाक्य

(ग) 1. मेरे घर के सामने अस्पताल है।

2. कितनी ऊंची इमारत है!

3. नीरज मुझसे मिलने आया, लेकिन मैं सो रहा था।

4. एक-एक करके सभी मेहमान चले गये।

(घ) टेलीविजन मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का उत्कृष्ट माध्यम है। नेशनल ज्योग्राफी तथा डिस्कवरी जैसे चैनलों पर एक-से-एक नई जानकारी प्राप्त होती है। आज देश की हर भाषा में टेलीविजन के समस्त कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। टेलीविजन पर भारतीय संस्कृति और पुराणों की जानकारी देने वाले 'रामायण', 'महाभारत', 'चाणक्य' जैसे विभिन्न धारावाहिक प्रसारित होते रहते हैं। बच्चों के कार्यक्रम, खबरें, मनोरंजन के धारावाहिक आदि प्रसारित किये जाते हैं। उपग्रहों के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए अनेक शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। आज देश की हर भाषा में टेलीविजन के समस्त कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

## 19. वाक्य विचार

(क) 1. वाक्य उस शब्द-समूह को कहते हैं जिससे कोई भाव या विचार पूर्ण रूप से प्रकट होता है। यदि शब्द-समूह से भाव या विचार पूर्ण रूप से प्रकट नहीं होता तो उसे वाक्य नहीं कहते।

2. बनावट या रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(i) सरल वाक्य (ii) मिश्र वाक्य (iii) संयुक्त वाक्य

(ख) 1. संयुक्त वाक्य, 2. संयुक्त वाक्य, 3. सरल वाक्य, 4. मिश्र वाक्य, 5. सरल वाक्य

(ग) 1. और मैं बाहर आया और वर्षा हो गई।

2. किंतु अनुज ने तैयारी की किंतु परीक्षा न दे सका।

3. कि पिता जी कहते हैं कि हमें सच बोलना चाहिए।

4. जो उसने जो किया, वह गलत था।

5. इसलिए दो दिन से बारिश हो रही है इसलिए पानी भर गया है।

## 20. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. जिन वाक्यांशों का सामान्य या शाब्दिक अर्थ न होकर विशिष्ट अर्थ होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।

2. समाज में लोगों के अनुभव के आधार पर कुछ ऐसे कथन प्रचलित हो चुके हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत हो चुके हैं। समाज में प्रचलित ऐसे कथन को लोकोक्ति या कहावत कहते हैं।

3. (i) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश या खंड-वाक्य होता है।

(ii) पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन हो जाता है।

(ख) 1. (**पूरी तरह वश में करना**) – रमा अपने पति को उँगली पर नचाती है।

2. (**बहुत शोर करना**) – शिक्षक के कक्षा से बाहर जाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

3. (**बहुत दिनों बाद दिखाई देना**) – नितिन जब से नौकरी करने लगा है ईद का चाँद हो गया है।

(ग) 1. (**शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ है**) – छोटे से बच्चे ने चोरों को पकड़वा दिया सच ही कहा है अक्ल बड़ी या भैंस।

2. (**ऊँट के मुँह में जीरा**)रमेश को उसके भाई ने ऊँट के मुँह में जीरा जितनी सम्पत्ति देकर घर से निकाल दिया।

3. (**एक साथ दो कार्य सिद्ध होना**)–सुमित को दफ्तर के काम से दिल्ली जाना था साथ ही वह बहन को भी मिलने चला गया, इससे एक पंथ दो काज हो गए।

## 21. अशुद्धि शोधन ( शब्द तथा वाक्य )

(क) 1. शुद्ध लेखन के लिए वर्तनी, व्याकरण, पठन, लेखन और श्रुतलेख का नियमित अभ्यास करें।

2. लेखन में प्राय: चार प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं—

(i) मात्रा की अशुद्धि (ii) अक्षर की अशुद्धि

(iii) अनुस्वार तथा अनुनासिक की अशुद्धि (iv) वाक्य-रचना संबंधी अशुद्धि

(ख) आधीन – अधीन, आर्शीवाद – आशीर्वाद, अहार – आहार, परिक्षा – परीक्षा, श्रीमति – श्रीमती, साधु-साधू, रूपया – रुपया, पितांबर – पीतांबर, भ्रश्ट – भ्रष्ट, प्रज्ज्वलित – प्रज्वलित, पुन्य – पुण्य, मतस्य – मत्स्य

(ग)

| शुद्ध शब्द | अशुद्ध शब्द | शुद्ध शब्द | अशुद्ध शब्द |
|---|---|---|---|
| प्रतीक्षा | मुल्य | दृश्य | प्रशन |
| शुरू | ऐतिहासिक | स्वास्थ्य | चिन्ह |
| साम्राज्ञी | संन्यास | श्रृंगार | |

(घ) 1. वे बाजार जा रहे हैं।

2. इस पुस्तक का मूल्य मात्र पचास रुपए है।

3. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

4. यह राजा हरिश्चंद्र की कहानी है।

5. हमारे घर के सामने अस्पताल है।

## 21. पत्र-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

## 22. कहानी-लेखन

**ईश्वर जो करता है, अच्छा करता है।**

एक दिन राजा मंत्री को संबोधित करते हुए बोले– देखो, आज चाकू से मेरी उंगली कट गई है। मंत्री बोला ईश्वर जो कुछ भी करता है मनुष्य के भले के लिए ही करता है। बादशाह बोले, मंत्री तुम्हें मेरे दुख का अंदाजा नहीं है। वह क्रोधित हो जाते हैं और मंत्री को राज्य से निकाल देते हैं। एक दिन राजा शिकार खेलने वन को गये और भटक कर डाकूओं के हाथों में जा पड़े। वे डाकू अपने देवता को प्रसन्न करने के लिए मानव बलि में विश्वास रखते थे। अत: वे राजा को पकड़ कर मंदिर में ले गये, बलि चढ़ाने के लिए। लेकिन जब पुजारी ने उनके शरीर का निरीक्षण किया तो हाथ की एक उंगली कम पाई।

नहीं, इस आदमी की बलि नहीं दी जा सकती।

मंदिर का पुजारी बोला– यदि नौ उंगलियों वाले इस आदमी को बलि चढ़ा दिया गया तो हमारे देवता बजाए प्रसन्न होने के क्रोधित हो जाएंगे, अधूरी बलि उन्हें पसंद नहीं। हमें महामारियों, बाढ़ या सूखे का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

इसलिए इसे छोड़ देना ही ठीक होगा और राजा को मुक्त कर दिया गया।

अगले दिन राजा ने मंत्री को वापस बुलाया और बोले– अब मुझे विश्वास हो गया है कि ईश्वर जो कुछ भी करता है, मनुष्य के भले के लिए ही करता है। यदि मेरी उंगली न कटी होती तो निश्चित ही डाकू मेरी बलि चढ़ा देते। मंत्री के ईश्वर पर विश्वास को संदेह की दृष्टि से देखना मेरी भूल थी।

इस तरह राजा ने मंत्री को दरबार में दोबारा रहने की अनुमति दे दी।

## 23. निबंध-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

# व्याकरण भाग - 5

## 1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. जिस माध्यम के द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान मौखिक या लिखित रूप में करते हैं, उसे भाषा कहते हैं।

2. **मौखिक भाषा-** जब व्यक्ति अपने विचारों को मुख से बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करता है, तो भाषा के इस रूप को मौखिक भाषा कहते हैं।

**लिखित भाषा-** जब व्यक्ति अपने विचारों को लिखकर प्रकट करता है तो भाषा के इस रूप को लिखित भाषा कहते हैं।

3. मौखिक भाषा के उदाहरण— (i) फोन पर बात करना (ii) भाषण देना

लिखित भाषा के उदाहरण— (i) पत्र लिखना (ii) डायरी लिखना

4. **बोली**-भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।

5. व्याकरण वह विद्या है, जिसके ज्ञान से हम भाषा को शुद्ध बोलते तथा शुद्ध लिखते हैं।

6. **लिपि-** भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कुछ संकेतों, ध्वनियों व चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन संकेतों, ध्वनियों तथा चिह्नों के समूह को लिपि कहते हैं।

(ख) 1. फारसी 2. अनपढ़, पढ़े-लिखे 3. जर्मन 4. लिखित 5. व्याकरण

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. **संसार में प्रयोग होने वाली 10 भाषाएँ-** हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, जर्मन, तुर्किश, फ्रेंच, अरबी, फारसी, नेपाली, चाइनीज।

**भारत में प्रयोग होने वाली 10 भाषाएँ-** हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, तमिल, मराठी, कन्नड़, गुजराती, तेलगु, उड़िया।

## 2. वर्ण विचार

(क) 1. वर्ण भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि है जिसके और टुकड़े नहीं किये जा सकते।

2. **स्पर्श व्यंजन-** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुँह के किसी-न-किसी भाग का स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

**अंत:स्थ व्यंजन-** जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुँह के किसी भाग से जीभ का स्पर्श पूरी तरह से नहीं होता है या जीभ मुँह के भागों से बहुत ही हल्का-सा स्पर्श करती है, वे अंत:स्थ व्यंजन कहलाते हैं।

**ऊष्म व्यंजन-** कुछ व्यंजनों के उच्चारण में वायु तेज गति से मुँह के भागों से रगड़ खाती हुई बाहर निकलती है, जिससे ऊष्मा (गर्मी) उत्पन्न होती है। इसीलिए ऐसे व्यंजन ऊष्मा व्यंजन कहलाते हैं।

3. हिंदी वर्णमाला में दो और व्यंजन हैं- ड़ और ढ़। इन्हें अतिरिक्त व्यंजन या अन्य व्यंजन भी कहते हैं। इन व्यंजनों के अतिरिक्त हिंदी भाषा में नुक्तायुक्त आगत वर्णों क़, ख़, ग़, ज़, फ़ का भी प्रयोग किया जाता है। ये वर्ण क, ख, ग, ज, फ वर्णों के विकसित रूप हैं।

4. **ह्रस्व स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

5. **ह्रस्व स्वर**- अ, इ, उ, ऋ।

   **दीर्घ स्वर**- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

6. **दीर्घ स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व की अपेक्षा अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

7. एक जैसे दो व्यंजनों का परस्पर संयुक्त होना द्वित्व कहलाता है तथा ऐसे व्यंजन द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं।

(ख) 1. संयुक्त करना 2. वर्ण 3. ड़, ढ़, 4. व्यंजन 5. महाप्राण

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) आ = ा, इ = ि, ई = ी, उ = ु, ऊ = ू, ऋ = ृ, ए = े, ऐ = ै, आ = ो, औ = ौ

(ङ) 1. खिलौना 2. शेर 3. चिड़िया 4. हाथी

(च) चार अंत:स्थ व्यंजन = य, र, ल, व

चार ऊष्म व्यंजन = श, ष, स, ह

द्वित्व व्यंजन वाले तीन शब्द = मक्का, बच्चा, लट्टू

पाँच महाप्राण व्यंजन = ख, फ, स, झ

## 3. शब्द विचार

(क) 1. वे शब्द जिनका प्रयोग एक ही अर्थ में होता है, एकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे- पुस्तक, सड़क, वृक्ष, घर, मेज, कुर्सी, दीवार आदि।

**अनेकार्थी शब्द**- वे शब्द जो एक से अधिक अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं, अनेकार्थक या अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

2. दो या अनेक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

3. **उत्पत्ति के आधार पर-** 'उत्पत्ति' का अर्थ है- 'जन्म'। उत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के पाँच भेद हैं-

   (i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द

   (iii) देशज शब्द (iv) विदेशी शब्द

   (v) मिश्रित शब्द

4. वे शब्द जो परंपरा से किसी विशेष अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं अर्थात् जो शब्द प्रचलित अर्थ बताते हैं, रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे– घोड़ा, देश।

5. हिंदी में शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया जाता है–

   (i) उत्पत्ति के आधार पर

   (ii) रचना (बनावट) के आधार पर

   (iii) अर्थ के आधार पर

   (iv) प्रयोग के आधार पर

6. यौगिक और योगरूढ़ में अंतर—

   यौगिक का अर्थ है— जुड़ा हुआ अर्थात दो सार्थक शब्दों को जोड़कर बना शब्द यौगिक कहलाता है; जैसे— वायु + यान = वायुयान। जबकि योगरूढ़ शब्द दो या अधिक शब्दों के मेल से बनकर एक विशेष अर्थ का बोध कराते हैं; चारपाई (चार पाँव वाली) अर्थात खाट।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) कर्ण – कान, मयूर – मोर, अश्रु – आँसू, नासिका – नाक, उज्ज्वल – उजला, अष्ट – आठ, दधि – दही, कच्छप – कछुआ, अंगुष्ठ – अँगूठा, कर्म – काम, घट – घड़ा, व्याघ्र – बाघ

(घ) **देशज शब्द**– ठेला, ताला, चाचा, खटपट, छप्पर, कोड़ी, सरपट

**विदेशी शब्द**– कार, आलू, कप, फकीर, सटकना, करामात, तख्त, कॉपी

(ङ) गंगा – जाह्नवी, भागीरथी, मंदाकिनी — आँख – नेत्र, नयन, लोचन

साँप – नाग, सर्प, विषधर — हाथी– गज, हस्ती, कुंजर

## 4. शब्द-निर्माण

(क) 1. एक शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण के मेल को संधि कहते हैं।

2. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

3. वे शब्दांश या शब्द खंड जो शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। हिंदी भाषा में प्रचलित उपसर्ग संस्कृत, हिंदी तथा अरबी–फारसी भाषा के हैं।

4. वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नये शब्द का निर्माण करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय भी शब्द के साथ जुड़कर ही प्रयुक्त होते हैं, ये अलग से प्रयोग नहीं किये जाते।

   प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं— 1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

(ख) पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, — चंद्र + उदय = चंद्रोदय,

सुर + ईश = सुरेश, — सदा + एव = सदैव,

महा + ऋषि = महर्षि — प्रति + एक = प्रत्येक

(ग) कार्य में कुशल = कार्यकुशल — देश का वासी = देशवासी

वन में वास = वनवास — परिवार के सहित = परिवारसहित

सेना का नायक = सेनानायक — राष्ट्र का पिता = राष्ट्रपिता

(घ) अनु + अनुकूल, अनुरूप — प्रति – प्रतिक्रिया, प्रतिकूल

सु + सुबोध, सुगंध — अति – अतिशय, अतिक्रम

(ङ) आई + मिठाई, लड़ाई — आहट – घबराहट, कड़वाहट

इया + बिटिया, चुहिया — हार – पालनहार, होनहार

## 5. संज्ञा

(क) 1. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, इमारत व भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

2. संज्ञा के प्रमुख तीन भेद होते हैं–

(i) जातिवाचक संज्ञा (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा

3. जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति या वर्ग के सभी प्राणियों, स्थानों, वस्तुओं आदि का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– पुरुष, स्त्री, गाय, मेज, कुर्सी, नदी, पहाड़, घर, पेड़ आदि।

4. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**– किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, प्राणी या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– कृष्ण, विष्णु, सीता, रामायण, महाभारत, चेतक, ऐरावत, कुतुबमीनार, ताजमहल आदि।

**भाववाचक संज्ञा**– जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के गुण, दोष, दशा, भाव आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– बुढ़ापा, वीरता, गहराई, बचपन, ऊँचाई, जवानी, निकटता, सजावट, चढ़ाई, मित्रता आदि।

5. **समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के समूह का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– भीड़, दल, सेना, सभा, झुंड आदि।

**पदार्थवाचक या द्रव्यवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ का बोध होता है, उन्हें पदार्थवाचक या द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, हीरा, मिट्टी, दूध, जल, तेल, लकड़ी आदि।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. स्त्री, गाय, मेज, नदी — 2. चेतक, ऐरावत, सीता, राम

3. बुढ़ापा, वीरता, गहराई, बचपन — 4. भीड़, दल, सेना, सभा

5. सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा

(घ) भाई – भाईचारा, माता – मातृत्व, सज्जन – सज्जनता,

नेता – नेतृत्व, लड़का – लड़कपन, सेवक – सेवा,

अंह – अहंकार, मीठा – मिठास, बोलना – बोली

(ङ) **भाववाचक संज्ञाएँ** – बालपन, नौकरी, ममत्व, कटुता, एकता, बोली, ऊपरी, शीघ्रता

(च) लोहा – पदार्थवाचक, शत्रुता – भाववाचक, ऊँचाई – भाववाचक

दल – समूहवाचक, कृष्ण – व्यक्तिवाचक, हाथी – जातिवाचक

यौवन – भाववाचक, ताजमहल – व्यक्तिवाचक, हीरा – पदार्थवाचक

सभा – समूहवाचक, पेड़ – जातिवाचक, मिट्टी – पदार्थवाचक

## 6. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के दो भेद होते हैं— (i) पुल्लिग (ii) स्त्रीलिंग

2. क्रिया द्वारा लिंग की पहचान–

(i) **रंजन** खाता है। (ii) **रजनी** खाती है।

3. विशेषण द्वारा लिंग की पहचान–

(i) **काला** घोड़ा। (ii) **काली** घोड़ी।

4. संबंधकारक द्वारा लिंग की पहचान–

(i) यह अमित **की** बेटी है। (ii) यह अमित **का** बेटा है।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) शिष्या – स्त्रीलिंग, सुत –पुल्लिग बिटिया – स्त्रीलिंग,

लेखक – पुल्लिग, ग्वाला – पुल्लिग, चौधराइन – स्त्रीलिंग

(घ) बेटा – बेटी, गुड्डा – गुड़िया, शिक्षक – शिक्षिका,

धावक – धाविका, ग्वाला – ग्वालिन, ठाकुर – ठकुराइन

(ङ) अनुजा – अनुज, दासी – दास, गायिका – गायक,

पाठिका – पाठक, नागिन – नाग, पंडिताइन – पंडित

(च) 1. सम्राज्ञी ने कवयित्री को पुरस्कार दिया।

2. शिक्षक ने छात्र से पुस्तक मँगाई।

3. मामी अपनी पुत्री के साथ बाजार गयी।

## 7. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी, वस्तु आदि (संज्ञा या सर्वनाम) के एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि प्राणी अथवा वस्तु आदि की संख्या एक है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे- तितली, लड़की, लड़का, पुस्तक, बस्ता, घोड़ा, बल्ला, ताला आदि।

3. शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि प्राणियों अथवा वस्तुओं आदि की संख्या एक से अधिक है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे- तितलियाँ, लड़के, पुस्तकें, बस्ते, घोड़े, बल्ले, ताले आदि।

4. (i) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आये 'अ' को 'एँ' (ँ) करके।

(ii) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आये 'आ' के बाद 'एँ' जोड़कर।

(iii) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आये 'इ' या 'ई' को 'इयाँ' करके तथा अंतिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व स्वर करके।

(iv) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'उ', 'ऊ' के बाद एँ करके तथा अंतिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व स्वर करके।

(v) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में आये 'या' को 'याँ' करके।

5. पदार्थवाचक संज्ञाएँ सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे- जल, दूध, चाय, तेल, घी, दही आदि।

(ख) 1. संख्या 2. वचन 3. वचन 4. संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया 5. गुड़ियाँ

(ग) लड़का - लड़के, चीता - चीते, सड़क - सड़कें, आँख - आँखे, दिशा - दिशाएँ, कला - कलाएँ, मिठाई - मिठाइयाँ, नारी - नारियाँ, वधू - वधुएँ

(घ) कमरे - कमरा, पतंगें - पतंग, छात्राएँ - छात्रा
बकरियाँ - बकरी, बाँहे - बाँह, गलियाँ - गली
धेनुएँ - धेनु, कुटियाँ - कुटी, दवाइयाँ -दवाई

(ङ) 1. <u>महिलाएँ</u> और <u>लड़कियाँ</u> बात कर रही हैं।

2. <u>रोटियाँ</u> और <u>मिठाइयाँ</u> ले आओ।

3. मैदान में <u>बच्चा</u> तथा <u>औरत</u> हैं।

4. <u>बुढ़ियाँ बकरियाँ</u> चरा रही हैं।

5. <u>छात्राएँ</u> व <u>शिक्षिकाएँ</u> जा रही हैं।

## 8. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं; उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

2. भाषा की स्वाभाविकता, स्पष्टता व सुंदरता बनाए रखने के लिए वाक्यों में संज्ञाओं के स्थान पर कुछ शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे- मैं, वह, तुम, आप, उसने आदि।

3. सर्वनाम के छह भेद होते हैं-

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) संबंधवाचक सर्वनाम

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम

4. **पुरुषवाचक सर्वनाम**– जो सर्वनाम शब्द कहने वाले, सुनने वाले या अन्य किसी व्यक्ति अथवा प्राणी के नाम के बदले प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित तीन उपभेद हैं–

**उत्तम पुरुष**– बात कहने वाला अपने नाम के बदले जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है; उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे– मैं, मुझे, हम, हमें, हमको आदि।

**मध्यम पुरुष**– बात कहने वाला व्यक्ति बात सुनने वाले के बदले जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे– तू, तुम, तुझे, तुम्हें, तुमको, आप, आपको आदि।

**अन्य पुरुष**– जिस प्राणी, व्यक्ति या वस्तु आदि के विषय में बात की जाती है, उसके नाम के बदले जिन सर्वनाम शब्दो का प्रयोग किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह, वे, उसे, उन्हें, उन्होंने, उसने आदि।

(ख) 1. कोई 2. वह 3. वही 4. क्यों 5. आप

(ग) उत्तम पुरुष सर्वनाम – मैं, हम, मुझको, हमें
मध्यम पुरुष सर्वनाम – तू, तुझे, तुम्हें, आप, तुम
अन्य पुरुष सर्वनाम – वे, उसे, वह, उन्हें, उन्होंने

(घ) 1. वह; पुरुषवाचक सर्वनाम
2. कुछ; अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. कौन; प्रश्नवाचक सर्वनाम
4. जो, वही; संबंधवाचक सर्वनाम

(ङ) 1. वह – <u>वह</u> मेरी कार है।
2. कोई – <u>कोई</u> आ रहा है।
3. स्वतः – शीला <u>स्वतः</u> ही उत्तर देगी।
4. आप – <u>आप</u> कौन हो?
5. तुम – <u>तुम</u> वहाँ नहीं जाओगी।
6. उन्होंने – आज <u>उन्होंने</u> आने से मना कर दिया।
7. उसका – <u>उसका</u> घर कहाँ है?
8. तुम्हारा – <u>तुम्हारा</u> भाई बुद्धिमान है।
9. कुछ – <u>कुछ लोग</u> बहुत दुष्ट होते हैं।
10. मुझको – अपना पता <u>मुझको</u> भेद देना।

(च) 1. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई जाकर दरवाजा खोलो।
2. निजवाचक सर्वनाम – मैं अपने आप खाना पका लूँगा।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम – वह मेरा मित्र है।
4. निश्चयवाचक सर्वनाम – वे मेरे दादा जी हैं।
5. संबंधवाचक सर्वनाम – जैसो करोगे, वैसा भरोगे।

## 9. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। उदाहरण– तुम लंबे हो।
2. विशेषण के पाँच भेद हैं।
3. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

4. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, दशा, स्वाद, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। उदाहरण- (i) कौआ काला है। (ii) वह आदमी बेईमान है।
5. कुछ पद विशेषण की विशेषता बताते हैं, ऐसे पदों को प्रविशेषण कहते हैं; जैसे- मेरे अध्यापाक अत्यधिक उदार हैं।

(ख) 1. विशेष्य 2. परिमाणवाचक 3. संज्ञा 4. प्रविशेषण 5. व्यक्तिवाचक

(ग)

| शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण | शब्द | विशेषण |
|---|---|---|---|---|---|
| दया | दयालु | दर्शन | दार्शनिक | लोभ | लोभी |
| सच | सच्चा | भारत | भारतीय | खर्च | खर्चीला |
| सीमा | सीमित | भाग्य | भाग्यशाली | मरना | मरियल |
| पूजना | पूजनीय | कमाना | कमाऊ | ऊपर | ऊपरी |

(घ) 1. बीस, संख्यावाचक विशेषण 2. मीठे, गुणवाचक विशेषण
3. खट्टा, गुणवाचक विशेषण 4. आलसी, बेईमान, गुणवाचक विशेषण
5. पाँच किलो, परिमाणवाचक विशेषण

(ङ) 1. बहुत 2. बड़ा ही 3. अत्यधिक 4. अति

## 10. कारक

(क) 1. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं।
2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध प्रकट करने वाले शब्द कारक चिह्न या परसर्ग कहलाते हैं।
3. **कर्ता कारक-** 'कर्ता' का अर्थ है- करने वाला। जिस शब्द से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'ने' है; जैसे- रजत ने कलम खरीदी।
4. **कर्म कारक-** वाक्य में जिस वस्तु या व्यक्ति पर क्रिया का प्रभाव या फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'को' है जो कभी कर्म के साथ प्रयुक्त होता है और कभी नहीं होता; जैसे-नरेंद्र अजीत को पढ़ाता है।

   **करण कारक-** जिस शब्द से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'से' तथा 'के द्वारा' है; जैसे- रीता चाकू से फल काटती है।
5. **संप्रदान कारक-** वाक्य में जिसके लिए क्रिया की जाती है या जिसको कुछ दिया जाता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'को' तथा 'के लिए' है; जैसे- रंजीता ने विवेक को पैसे दिये।

   **अपादान कारक-** जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'से' है; जैसे- पेड़ से पत्ता गिरा।

(ख) 1. ने - नेहा **ने** कहानी लिखी है।
2. से - तुम बाजार **से** फल भी ले आना।

3. के लिए – नितिन अपने मित्र **के लिए** उपहार लाया है।

4. पर – मेज **पर** किताब रखी है।

5. हे – **हे** प्रभु! आप शक्तिशाली हैं।

(ग) 1. ने 2. से ('के द्वारा' के अर्थ में) 3. से ('अलग होने' के अर्थ में) 4. में, पर

(घ) 1. करण कारक 2. अपादान कारक 3. करण कारक 4. अपादान कारक

## 11. क्रिया

(क) 1. किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। क्रिया की रचना धातु से होती है।

2. **सकर्मक क्रिया**– जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे– (i) विवेक ने गीत लिखा। (ii) सुमित खाना लाया।

**अकर्मक क्रिया**– जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– (i) सुदीप लिखता है। (ii) रूपा याद कर रही है।

3. **द्विकर्मक क्रियाएँ**– जिन क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहते हैं; जैसे– विजय ने अदिति को कलम दी।

**अपूर्ण क्रिया**– अकर्मक क्रियाओं मे कर्ता तथा सकर्मक क्रियाओं में कर्ता और कर्म दोनों अपेक्षित होते हैं। परंतु कभी–कभी क्रिया अपूर्ण रह जाती हैं; जैसे– (i) मैंने देखा। (ii) मैं तुम्हें अवश्य लिखूँगा।

(ख) 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया 3. सकर्मक क्रिया 4. सकर्मक क्रिया 5. अकर्मक क्रिया

(ग)

| | **क्रिया पद** | **धातु** |
|---|---|---|
| 1. | लाऊँगा | ला |
| 2. | सुन लिया | सुन |
| 3. | नाची | नाच |
| 4. | दौड़ रहा | दौड़ |
| 5. | बैठा | बैठ |

(घ) 1. मैं सरकस **देखना** चाहता हूँ। 2. रोहन **सोना** चाहता है।

3. हमें अभी **जाना** है। 4. ये चिड़िया का बच्चा **उड़ना** सीख गया है।

5. सुबह खाली पेट पानी **पीना** चाहिए।

## 12. वाच्य

(क) 1. वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह ज्ञात होता है कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है।

2. वाच्य के तीन भेद हैं।

3. वाच्य के भेदों के नाम— कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य और भाव वाच्य हैं।

4. **कर्तृ वाच्य**– कर्तृ वाच्य में कर्ता को प्रधानता दी जाती है; जैसे– मैं हॉकी खेलता हूँ।

5. **कर्म वाच्य**– इसमें कर्म को प्रधानता दी जाती है; जैसे– हॉकी मेरे द्वारा खेली जाती है।

6. **भाव वाच्य**– इसमें न तो कर्ता को प्रधानता दी जाती है और न ही कर्म को, बल्कि इसमें क्रिया के मुख्य भाव को प्रधानता दी जाती है; जैसे– मुझसे अब खेला नहीं जाता।

(ख) 1. मैं पर बल दिया गया है। 2. 'हॉकी से' पर बल दिया गया है।

3. 'साइकिल से' पर बल दिया गया है। 4. 'सुमन' पर बल दिया गया है।

5. 'पढ़ा' पर बल दिया गया है।

(ग) 1. भाववाच्य 2. भाववाच्य 3. कृर्तवाच्य 4. कृर्तवाच्य 5. कर्मवाच्य

(घ) 1. खेलता है– कृर्तवाच्य 2. भागा नहीं जाता – भाववाच्य 3. मेरे द्वारा – कर्मवाच्य

## 13. क्रिया-विशेषण

(क) 1. वाक्य में प्रयुक्त क्रिया पद की विशेषता बताने वाला शब्द क्रिया– विशेषण कहलाते हैं।

2. क्रिया–विशेषण के मुख्यत : छह भेद होते हैं–

1. कालवाचक क्रिया–विशेषण 2. स्थानवाचक क्रिया–विशेषण

3. रीतिवाचक क्रिया–विशेषण 4. परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण

5. प्रश्नवाचक क्रिया–विशेषण 6. निषेधवाचक क्रिया–विशेषण

3. जिस क्रिया–विशेषण से क्रिया का काल (समय) ज्ञात हो, उसे कालवाचक क्रिया–विशेषण कहते हैं; जैसे– धैर्य हमेशा लिखता रहता है।

4. जिस क्रिया–विशेषण से क्रिया के होने का स्थान ज्ञात हो, उसे स्थानवाचक क्रिया–विशेषण कहते हैं; जैसे– वह बाहर जा रहा है।

(ख) 1. ध्यानपूर्वक, रीतिवाचक क्रिया–विशेषण

2. के अंदर, स्थानवाचक क्रिया–विशेषण

3. हमेशा, कालवाचक क्रिया–विशेषण

4. खूब, परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण

5. मत, निषेधवाचक क्रिया–विशेषण

6. किधर, प्रश्नवाचक क्रिया–विशेषण

(ग) 1. मैं **प्रतिदिन** स्कूल जाता हूँ। 2. मेरे घर की **दाएँ** ओर बगीचा है।

3. यह भोजन दो व्यक्तियों के लिए **पर्याप्त** है। 4. चोरी **मत** करो।

(घ) 1. कालवाचक— हमें कल दिल्ली जाना है।

2. रीतिवाचक— जल्दी–जल्दी कार्य पूरा करो।

3. परिमाणवाचक— श्रेया बहुत बुद्धिमान है।

4. निषेधवाचक— झूठ मत बोलो।

## 14. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का ज्ञान हो, उस समय को काल कहते हैं।
काल के तीन भेद हैं- (i) वर्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविष्यत् काल

2. क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का ज्ञान हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

3. वर्तमान काल के तीन भेद हैं-

**सामान्य वर्तमान काल** **अपूर्ण वर्तमान काल** **संदिग्ध वर्तमान काल**

4. क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में पूर्ण होने का ज्ञान हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

5. भूतकाल के छह भेद होते हैं-

**सामान्य भूतकाल** **आसन्न भूतकाल** **पूर्ण भूतकाल**
**अपूर्ण भूतकाल** **संदिग्ध भूतकाल** **हेतु-हेतुमद् भूतकाल**

6. क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का पता चले, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

7. भविष्यत् काल के दो भेद हैं।

**सामान्य भविष्यत् काल** **संभाव्य भविष्यत् काल**

(ख) 1. अपूर्ण वर्तमान काल 2. अपूर्ण भूतकाल
3. संभाव्य भविष्यत् काल 4. हेतु-हेतुमद भूतकाल

(ग) 1. रोहन खाना खा रहा है। 2. रूही घर पर आ चुकी है।
3. अध्यापक ने पाठ पढ़ाया था। 4. आज शायद वर्षा होगी।
5. यदि वर्षा हुई तो फसल अच्छी होगी।

## 15. शब्द भंडार

(क) 1. एक वस्तु के लिए समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यावाची शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण- अग्नि - अनल, आग, पावक, हुताशन, दहन, दव।

2. एक-दूसरे का ठीक विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं।
उदाहरण- प्रशंसा -निंदा, अपना - पराया।

3. संक्षिप्तता के कारण भाषा को समझने में कठिनाई न हो, इसके लिए शब्द-समूहों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

4. वे शब्द जिनका प्रयोग एक ही अर्थ में होता है, एकार्थी शब्द कहलाते हैं। उदाहरण- पुस्तक, सड़क।

(ख) **आँसू** - अश्रु, अश्क **पत्थर** - पाषाण, उपल
**पक्षी** - खग, विहग **क्रोध** - आक्रोश, अमर्श

(ग) **रिक्त** - पूर्ण **अतीत** - भविष्य
**गूढ़** - सरल **शीत** - उष्ण
**शाक्त** - विशाक्त **सम** - विषम

(घ) 7. **वंदनीय** – जो वंदना करने योग्य हो
**तटस्थ** – जो किसी का पक्ष ना ले
**देशप्रेमी** – देश से प्रेम करने वाला
**जिज्ञासु** – जिसमें जानने की इच्छा हो

(ङ) **उत्तर** – जवाब, एक दिशा
**मधु** – शहद, मदिरा
**कल** – आने वाला दिन, मशीन
**नाना** – माँ का पिता, विविध

(च) 1. मोहित बाजार जाता था।
2. शायद शिक्षक छात्रों को पढ़ा रहे होंगे।
3. पिता जी दिल्ली जाते हैं।
4. वर्षा हो रही थी।
5. शोभित पढ़ रहा है।

## 16. विस्मयादिबोधक

(क) 1. जो अविकारी शब्द हर्ष, दु:ख, आश्चर्य, पीड़ा आदि भावों को प्रकट करते हैं, उन शब्दों को विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं।
2. विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग वाक्य के आरंभ में किया जाता है तथा इन शब्दों के साथ विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।

(ख) 1. वाह! 2. ओहो! 3. शाबाश! 4. क्या 5. हाय

(ग) 1. वाह-वाह!, हर्षबोधक
2. ओह!, शोकबोधक
3. अवश्य!, अनुमोदनबोधक
4. हे मित्रो!, संबोधनबोधक
5. धत्!, तिरस्कारबोधक

(घ) 1. धन्य! तुम्हारी देशभक्ति को नमन है।
2. वाह-वाह! कितना सुंदर दृश्य है।
3. हाँ-हाँ! मैं यह कर सकता हूँ।
4. रे! तुम कब सुधरोगे।

## 17. वाक्य विचार

(क) 1. सार्थक शब्दों के उस क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं, जिससे पूरा विचार प्रकट हो।
2. वाक्य में दो अंग होते हैं-
(i) उद्देश्य (ii) विधेय
3. **विधेय**- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।
**उद्देश्य**- वाक्य में जिस प्राणी या वस्तु के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।
4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—
(i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य (iii) मिश्र वाक्य
5. अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं—
(i) विधिवाचक (ii) आज्ञावाचक (iii) निषेधवाचक (iv) प्रश्नवाचक (v) विस्मयादिबोधक (vi) संदेहवाचक (vii) इच्छावाचक (viii) संकेतवाचक।

(ख) 1. संयुक्त वाक्य — 2. सरल वाक्य

3. मिश्र वाक्य — 4. संयुक्त वाक्य

(ग) 1. प्रश्नवाचक वाक्य — 3. आज्ञावाचक वाक्य

2. इच्छावाचक वाक्य — 4. प्रश्नवाचक वाक्य

(घ)

| | उद्देश्य | विधेय |
|---|---|---|
| 1. | बादल | गरज रहे हैं। |
| 2. | नेहा के बड़े भाई का मित्र | खिलाड़ी है। |
| 3. | कोयल | पेड़ पर बैठी है। |
| 4. | शिकारी | ने चिड़िया पकड़ ली थी। |
| 5. | अभिनव | आ चुका था। |

(ङ) 1. विस्मयादिबोधक वाक्य

(i) अरे! कितनी ऊँची इमारत है। (ii) वाह! क्या सुंदर फूल है।

2. आज्ञावाक्य

(i) बैठ जाइए। (ii) जाओ! बाहर से सामान उठा लाओ।

3. मिश्रवाक्य

(i) मैं जानती हूँ कि उसने ही गलती की है। (ii) उसने कहा कि वह शिक्षक है।

4. निषेधवाचक

(i) मैं झूठ नहीं बोल सकता। (ii) बच्चे पढ़ नहीं रहे हैं।

5. सरल वाक्य

(i) लड़कियाँ गाना गा रही हैं। (ii) हम क्रिकेट खेलते हैं।

## 18. विराम-चिह्न

(क) 1. लेखन में विराम (रुकने) का संकेत देने तथा कथन का आशय समझाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

2. किसी बात पर विशेष प्रकाश डालने के लिए या विवरण प्रस्तुत करने के लिए निर्देशक या विवरण प्रस्तुत करने के लिए निर्देशक या विवरण चिह्न लगाया जाता है। जैसे—

(i) सफलता का एक ही मंत्र है— परिश्रम।

(ii) जीवन की तीन मूल आवश्यकताएँ हैं— रोटी, कपड़ा और मकान।

3. जब किसी विषय को एक वाक्य में ही समझाने का प्रयास किया जाता है तब कोष्ठक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

(i) नेता जी (सुभाष चंद्र बोस) महान व्यक्ति थे।

(ii) राजा ने (क्रोधित होकर) मंत्री को बुलाया।

(ख) 1. निर्देशक, विवरण 2. प्रश्नसूचक, विस्मयसूचक 3. चिह्न 4. प्रश्न 5. निर्देशक चिह्न

(ग) 1. गुप्त जी ने लिखा है– वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।
2. टेलीविजन मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का उत्कृष्ट माध्यम है।
3. पशु-पक्षियों में से एक गौरैया, कठफोड़वा, भौंरे और एक मेंढ़क में बहुत गहरी मित्रता थी।
4. एक बार देव और दानव ब्राह्मा के पास गए और बोले, ''अधिक बुद्धिमान कौन हैं देव या दानव?''
5. दीन-दुखी, लूले-लँगड़े, बच्चे सब परोपकार के कारण ही अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

(घ) 1. पेड़-पौधों (प्रकृति) का संरक्षण करना चाहिए।
2. चित्रा, दीप्ति और राहुल मेला देखने गए हैं।
3. इस कहानी का नाम है— पंचायत।
4. डॉ० साहब अंदर बैठे हैं।
5. तुम क्या कर रहे हो?
6. अरे! तुम आ गए।
7. 'सत्य की सदा विजय होती है।'
8. हमें जीवों के प्रति दया की भावना रखनी चाहिए।

(ङ) परोपकार का अर्थ है— नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना। जो मनुष्य अपने स्वार्थों को त्यागकर दूसरों की भलाई में लगे रहते हैं, वे परोपकारी कहलाते हैं। परोपकार से मनुष्य देवतुल्य हो जाता है। सब उसकी प्रशंसा करते हैं। परोपकार मानवता का सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख गुण धर्म है। परोपकारी व्यक्ति सदैव दीन:दु:खियों और असहाय व्यक्तियों का आशीर्वाद प्राप्त करता है। इससे वह जीवनपर्यंत सुखी और समृद्ध बना रहता है।

## 19. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. समाज में लोगों के अनुभव के आधार पर कुछ ऐसे कथन प्रचलित हो चुके हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत हो चुके हैं। समाज में प्रचलित ऐसे कथन लोकोक्ति या कहावत कहलाते हैं।
2. जिन वाक्यांशों का सामान्य या शाब्दिक अर्थ न होकर विशिष्ट अर्थ होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।
3. लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाकयांश या खंड-वाक्य होता है।

पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परविर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन हो जाता है।

(ख) 1. आँखें फेर लेना— बदल जाना
रमेश ने नौकरी लगते ही परिवार से आँखें फेर लीं।
2. अपने पैरों पर खड़े होना— आत्मनिर्भर बनना।
प्रत्येक व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है।
3. उँगली पर नचाना— वश में करना
मदारी बंदर को अपनी उँगली पर नचा रहा है।

4. घाव पर नमक छिड़कना- दुखी को ओर दुखी करना

परीक्षा में फेल होने पर दोस्तों ने उसके घाव पर नमक छिड़कना शुरू कर दिया।

5. कोल्हू का बैल— कड़ी मेहनत करने वाला

किसान कोल्हू के बैल की तरह मेहनत करता है।

(ग) 1. अनपढ़ होना—

उसे पढ़ना नहीं आता इसलिए उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर।

2. चुप रहकर झगड़े को टालना—

पिता को गुस्सा देखकर उमेश अपना काम करता रहा क्योंकि वह जानता था एक चुप सौ को हराए।

3. अपर्याप्त मात्रा—

केवल एक पुड़ी अखिल के लिए ऊँट के मुँह में जीरा के समान है।

4. प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं—

मुझसे यह काम अभी करा लीजिए, हाथ कंगन को आरसी क्या।

5. अकेला व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता—

साफ-सफाई के लिए सभी को योगदान देना चाहिए क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

(घ) 1. घर की मुर्गी दाल बराबर
2. खून का घूँट पीकर रह जाना
3. एक हाथ से ताली नहीं बजती
4. आँखों में धूल झोंकना
5. दाल में काला होना
6. कान पर जूँ न रेंगना

## 20. पत्र-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

## 21. कहानी-लेखन

**1. अक्ल बड़ी या भैंस**

एक गधा मैदान में हरी-हरी कोमल-कोमल दूब चर रहा था,

अचानक जो उसने सर उठाया, तो एक बाघ को अपनी ओर आते देखा।

गधा समझ गया कि अब प्राण बचना असंभव है।

बाघ के सामने से भाग निकलना असंभव है।

फिर क्या करे?

यों ही प्राण खो दें?

उसने सोचा बड़े बूढ़े की कहावत है—

अक्ल बड़ी या भैंस? क्यों न आज वही कहावत काम में लायी जाए। इस प्रकार बुद्धि के बल से बाघ को नीचा दिखाया जाये और इसको उल्लू बनायें।

उसने पिछले एक पैर से लंगड़ा-लंगड़ा कर चलना शुरू कर दिया। बाघ ने गधे के पास जाते-जाते पूछा- क्यों भाई गधे! यह तू लंगड़ा-लंगड़ा कर क्यों चलता है?

गधे ने उत्तर दिया–क्या कहें सरकार! दौड़ते समय पैर में एक बहुत लंबा बहुत मोटा कांटा चुभ गया है।

उसी से पैर में बहुत कष्ट हो रहा है और मैं लंगड़ाकर चल रहा हूँ।

गधे ने कहा यदि खाने के विचार रखते हो तो पहले वह कांटा बाहर निकालो।

कहीं ऐसा नहीं हो कि मुझे खाते समय वह कांटा गलती से तुम्हारे गले में अटक जाए और तुम्हें अपने प्राण खोने पड़े।

बाघ को गधे का कहना जँच गया। उसने गधे का वह पैर उठाया और बड़े ध्यान से उसमें काँटा ढूँढना शुरू किया।

गधे ने यह मौका बहुत अच्छा समझा और कसकर दुलत्ती मारी तथा हवा के समान तेजी से भाग निकला।

जो तड़ाक से दुलत्ती की चोट पड़ी तो बाघ का मुंह टेढ़ा हो गया उसके सामने वाले दांत झड़ गये और जबड़े खून से भर गये।

बस वह लज्जित होकर कह उठा–उफ। गधे की बुद्धि के सामने बाघ का बल कुछ काम न आया।

**2. रंगा सियार**

किसी जंगल मं एक सियार रहता था। वह थोड़ा दुबला–पतला था इसलिए जंगल के दूसरे सियार और बाकी जानवर उसे हमेशा डराते रहते थे। वह कमजोर होने के कारण कुछ नहीं कर पाता था। एक दिन की बात है।

वह घूमते–घूमते एक गाँव में पहुँच गया। उस गाँव में कुछ धोबी कपड़े धो रहे थे और सफ़ेद कपड़े को नील में रंग के सुखा रहे थे। गाँव के बच्चों ने जब उस सियार को देखा तो उसे भगाने लगे। बेचारा सियार भी भागते–भागते उस नील से भरे पात्र में गिर गया। और जब वह भागते–भागते जंगल पहुँचा तो उसे देख सब जानवर डर गये, क्योंकि नील के कारण वह नीले रंग का हो गया था। सियार ने भी सोचा चलो ठीक है अब इन्हें मज़ा चखाते हैं। वह एक टीले पर बैठ गया और कहने लगा सुनो मुझे इस जंगल के देवता ने भेजा है। आज से इस जंगल का राजा मैं हूँ। सभी जानवरों ने भी मान लिया यह नया जानवर ही हमारा राजा है। सब जानवर उसकी सेवा में लग गये।

शेर, बाघ, चीता को उसने पहरेदारी पे लगा दिया हाथी की सवारी करने लगा। और छोटे–छोटे जानवर जैसे– ख़रगोश को उसने अपनी सेवा में लगा दिया। एक दिन अचानक वह यह भूल गया कि वह राजा है और जब दूसरे सियार हुआ हुआ कर बोल रहे थे तो राजा भी हुआ हुआ करने लगा। यह देख सब समझ गये की यह राजा नहीं है बल्कि वो दुबला पतला सियार है और फिर सब जानवरों ने उसे जंगल से भगा दिया।

**3. कपटी मित्र और भालू**

दो दोस्त एक घने जंगल में से होकर कहीं जा रहे थे। दोनों काफ़ी गहरे दोस्त थे और अपनी दोस्ती को लेकर दोनों ही बातें करते हुए जा रहे थे। जंगल बहुत ही घना था, तो उनमें से एक दोस्त डर रहा था, लेकिन उसके साथी मित्र ने कहा कि मेरे होते हुए तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हारा सच्चा और अच्छा मित्र

हूँ। इतने में ही सामने से बहुत बड़ा भालू उन्हें नज़र आया। जो दोस्त कह रहा था कि मैं अच्छा मित्र हूँ, वो भालू को देखते ही भाग खड़ा हुआ। दूसरा मित्र कहता रहा कि मुझे छोड़कर मत भागो, लेकिन वो भागते हुए एक पेड़ पर चढ़ गया।

यह देख उसका मित्र और भी डर गया, क्योंकि वो पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता था। इतने में वो भालू और भी नज़दीक आ गया था। जब वो बेहद क़रीब आने लगा, तो दूसरे मित्र के पास कोई चारा नहीं रहा और वो वहीं नीचे ज़मीन पर आंखें बंद करके लेट गया। पेड़ पर चढ़ा मित्र यह सारा नज़ारा देख रहा था और वो सोचने लगा कि ऐसे तो यह मर जाएगा। इतने में ही वो भालू नीचे लेटे मित्र के क़रीब आकर उसे देखने लगा, उसे सूंघा और उसके शरीर का पूरी तरह मुआयना करके आगे बढ़ गया।

ज़मीन पर लेटे मित्र ने राहत की सांस ली और वो सोचने लगा कि अच्छा हुआ जो मैंने सांस रोक ली थी, क्योंकि भालू मुर्दों को नहीं खाते और वो भालू मुझे मरा हुआ जानकर आगे बढ़ गया।

पेड़ पर चढ़ा मित्र बहुत हैरान था। भालू के जाने के बाद वो नीचे उतरा और उसने अपने मित्र से पूछा कि आख़िर उसने क्या किया था और वो भालू उसके कान में क्या कह रहा था। मुर्दा होने का नाटक कर रहे मित्र ने कहा कि भालू ने मेरे कान में कहा कि बुरे वक्त में ही सही दोस्तों की पहचान होती है, इसलिए कभी भी ऐसे दोस्तो के साथ मत रहो, जो बुरा समय देखकर तुम्हें अकेले छोड़कर भाग जाएं और जो वक्त पर काम ही न आएं। दूसरे मित्र को समझने में देर न लगी और फिर दोनो आगे बढ़ गये।

**सीख** : सच्चा दोस्त वही होता है, जो बुरे से बुरे वक्त में भी अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता और मुसीबत के समय अपने मित्र की मदद करता है।

**4. कबूतरों का झुंड और बहेलिया**

पुराने समय की बात है, एक जंगल में बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत सारे कबूतर रहते थे। वो जंगल में घूम-घूमकर भोजन की तलाश करते और अपना पेट भरते थे। उन सभी कबूतरों में एक बूढ़ा कबूतर भी था। बूढ़ा कबूतर बहुत ही समझदार था। इसलिए, सभी कबूतर उसकी बात माना करते थे।

एक दिन उस जंगल में कहीं से घूमता हुआ एक बहेलिया आया। उसकी नजर उन कबूतरों पर पड़ी। कबूतरों को देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई और उसने अपने मन में कुछ सोचा, और वहाँ से चला गया, लेकिन बूढ़े कबूतर ने उस बहेलिए को देख लिया था।

दूसरे दिन भरी दोपहर में सभी कबूतर पेड़ पर आराम कर रहे थे। उस दिन वह बहेलिया फिर आया और उसके देखा कि गर्मी की वजह से सभी कबूतर पेड़ पर आराम कर रहे हैं। उसने बरगद के नीचे जाल बिछा कर उस पर कुछ दाने बिखेर दिये और दूसरे पेड़ के पीछे छूप गया।

कबूतरों में से एक कबूतर की नजर उन दानों पर पड़ी। दानों को देखते ही उसने सभी कबूतरों से कहा कि- देखो भाइयों! आज तो किस्मत ही खुल गई। हमें आज भोजन की तलाश में कहीं जाना नहीं पड़ा, उल्टा भोजन ही हमारे पास आ गया। चलो चलकर मजे से भोजन करते हैं।

गर्मी से बेहाल और भूख से परेशान कबूतर जैसे ही नीचे उतरने लगे, बूढ़े कबूतर ने उन्हें रोका, लेकिन किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी और नीचे जाकर दाना चुगने लगे।

बूढ़े कबूतर की नज़र अचानक पेड़ के पीछे छिपे बहेलिया पर गई और उसे माजरा समझते देर नहीं लगी, लेकिन सभी जाल में फंस चुके थे। कबूतर उड़ने की जितनी कोशिश करते उतने ही जाल में उलझ जाते।

कबूतरों को जाल में फंसा देखकर, बहेलिया पेड़ के पीछे से निकल आया और उनको पकड़ने के लिए उनकी ओर बढ़ा। यह देखकर सभी कबूतर डर गये और बूढ़े कबूतर से मदद की गुहार करने लगे।

तब बूढ़ा कबूतर कुछ सोचने लगा और बोला कि जब मैं कहूं तब सभी एक साथ उड़ने की कोशिश करेंगे और उड़कर सभी मेरे पीछे चलेंगे। कबूतर कहने लगे कि हम जाल में फंसे हैं, कैसे उड़ पाएंगे इस पर बूढ़े कबूतर ने कहा कि सभी एक साथ कोशिश करेंगे, तो उड़ पाएंगे।

सभी ने उसकी बात मानी और उसके कहने पर सभी एक साथ उड़ने की कोशिश करने लगे। उनके इस प्रयास से वो जाल सहित उड़ गये और बूढ़े कबूतर के पीछे-पीछे उड़ने लगे।

कबूतरों को जाल सहित उड़ता देख बहेलिया हैरान रह गया, क्योंकि उसने पहली बार कबूतरों को जाल लेकर उड़ते देखा था। वह कबूतरों के पीछे-पीछे भागा, लेकिन कबूतर नदी और पर्वतों को पार करते हुए निकल गये। इससे बहेलिया उनका पीछा नहीं कर पाया।

इधर बूढ़ा कबूतर जाल में फंसे कबूतरों को एक पहाड़ी पर ले गया, जहाँ उसका एक चूहा मित्र रहता था। कबूतर को आता देख उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, लेकिन जब बूढ़े कबूतर ने सारा किस्सा सुनाया, तो उसे दुख भी हुआ। उसने कहा कि मित्र चिंता मत करो, मैं अभी अपने दांतों से जाल को काट देता हूँ।

उसने अपने दांतों से जाल को काट कर सभी कबूतरों को आजाद कर दिया। कबूतरों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सभी ने चूहे को धन्यवाद दिया और बूढ़े कबूतर से क्षमा मांगी।

**सीख**- इस कहानी से यह सीख मिलती है कि एकता में ही ताकत होती है और हमें हमेशा बड़ों की बात माननी चाहिए।

## 22. निबंध-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।